Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित
प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 42 अंक-37 | सम्पादक मुन्ना कुमार शर्मा | दिनांक 28 नवम्बर से 04 दिसम्बर 2018 तक | वार्षिक शुल्क 150 रुपये
कल्पादि सम्वत् 1972949118 | मार्गशीर्ष कृष्ण षष्ठी से मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी 2075 तक | पृष्ठ संख्या 12

राजस्थान में लहर.... पृष्ठ- 2
योगासन जो दिल को.... पृष्ठ- 4
संसार को सुन्दर... पृष्ठ- 5
विश्व में भारत... पृष्ठ- 7
संघ के बदलते.. पृष्ठ- 12

- बैंक ऑफ चाइना पर रहें सजग
- भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां
- सबरीमला आस्था, परम्परा और सिद्धांत की लड़ाई
- हलाला के खिलाफ आवाज उठाने वाली पर तेजाब से हमला

रोहिंग्या मददगारों पर सरकार की निगरानी

रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेजा जाये–हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

भारत में अवैध रूप से रह रहे रोहिंग्या मुसलमानों के मददगारों की निगरानी की जा रही है।केन्द्र सरकार ने भारत में रोहिंग्या शरणार्थियों को कथित रूप से अवैध प्रवास में मदद कर रहे दर्जन भर संदिग्ध गैरसरकारी स्वयंसेवी संगठनों और व्यक्तियों को चिन्हित किया है। केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने देश के विभिन्न हिस्सों में कार्यरत ऐसे संगठनों की सूची तैयार कर इनकी गतिविधियों पर निगरानी तेज कर दी है। मंत्रलय के सूत्रों के अनुसार, चिन्हित किए गए अधिकांश संगठन दिल्ली से संचालित हैं। इन पर सामाजिक कार्य कर्ताओं के माध्यम से अवैध रोहिंग्या शेष पृष्ठ 10 पर

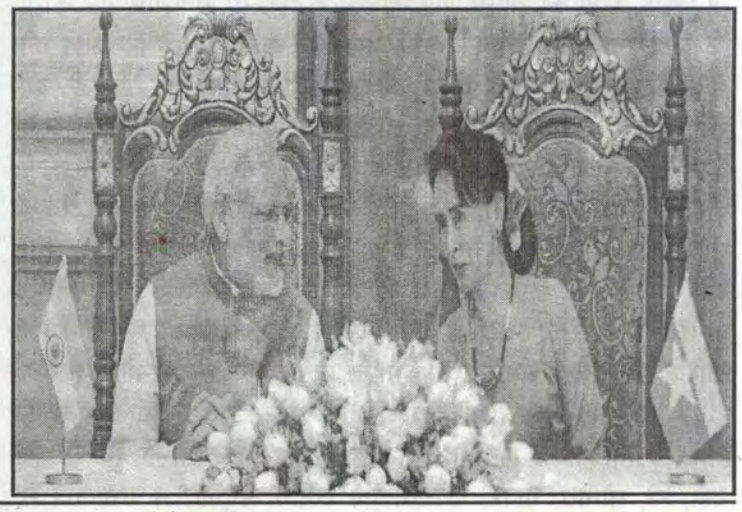

अमर हुतात्मा पण्डित नाथूराम व नाना आप्टे का ६६ वां बलिदान दिवस आयोजित

● संवाददाता ●

मेरठ १५ नवम्बर को हिन्दू महासभा कार्यालय शारदा रोड पर गांधीवध के दो वीरों का बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने की व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हिन्दू युवा वाहनी के प्रदेश मंत्री श्री नागेन्द्र तोमर विशिष्ठ अतिथि हिन्दू महासभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री योगेन्द्र वर्मा व दौराला के प्रधान श्री पुरषोत्तम उपाध्याय रहे। सभा का संचालन जिलाध्यक्ष अभिषेक अग्रवाल ने किया। सर्वप्रथम उन वीर बलिदानियों की स्मृति में हवन पूजन का आयोजन किया गया। अमर हुतात्मा नाथूराम गोडसे की विश्व की प्रथम प्रतिमा स्थापित करने वाले हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पण्डित अशोक शर्मा उपस्थित थे। मुन्ना कुमार शर्मा ने उन वीरों के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला और बताया कि नाथूराम गोडसे व नाना आप्टे विश्व के एक मात्र महामानव थे उन्होंने अपने मृत्यु दण्ड के विरूद्ध कोई याचना नहीं की और राष्ट्र की बली वेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिये उक्त दोनों महा मानव स्वतंत्र वीर सावरकर जी के परम प्रिय शिष्य थे। नाथू रामगोडसे महान विचारक, प्रखर राष्ट्र भक्त और महान पत्रकार थे। सभा के अन्त में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव रखा गया कि उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री महन्त श्री श्री आदित्यनाथ जी ने जिस प्रकार मुगलकालीन अपमान के प्रतिक नगरों का नामकरण शेष पृष्ठ 10 पर

स्वास्तिक

✍ श्रीयुत शंकर लाल माहेश्वरी

भारतीय संस्कृति के मांगलिक प्रतीकों में स्वास्तिक का महत्त्वपूर्ण स्थान है, विशेष मांगलिक शुभ अवसरों पर इस प्रतीक का प्रयोग अवश्य ही किया जाता है, भारतीय धर्म ग्रन्थों तथा वैदिक साहित्य में इस प्रतीक का विशिष्ट प्रयोग हुआ है, शादी–विवाह, गृह प्रवेश, जन्मदिन, देवपूजन, व्यापार, बही खाता, शिक्षा का शुभारम्भ एवं मुंडन संस्कार आदि में स्वास्तिक पूजन अनिवार्य समझा जाता है, किसी भी प्रकार के शुभ कार्य का प्रारम्भ स्वास्तिक पूजन से ही सम्पादित होता है, महिलाएँ हाथों में मेंहदी से स्वास्तिक चिन्ह बनाती हैं तथा यह प्रतीक दुष्टात्माओं व दैविक कोप से मुक्ति प्रदान करने वाला माना जाता है। 'स्वास्तिक' शब्द का निर्माण 'सुअसक' से हुआ है। सु का अर्थ अच्छा अस का अर्थ सत्ता या अस्तित्व और क का अर्थ कृर्तता या करने वाले से है, इस प्रकार सन्निहित है तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम' का परिचायक है, पतंजलि योग में भी इस प्रतीक का विशेष विश्लेषण हुआ है। प्राचीन मूर्तियों, मन्दिरों, शिलालेखों आदि में यह चिन्ह अंकित है, अमर कोष में स्वास्तिक शब्द की व्याख्या विशेष रूप से की गई है। स्वास्तिक, सर्वतोऋद्ध अर्थात सभी दिशाओं में सबका कल्याण हो। स्वास्तिक शब्द की निरुक्ति है—स्वास्तिक क्षेमकायति, इति स्वास्तिकः अर्थात् कुशलक्षेम या कल्याण का प्रतीक स्वास्तिक ही है, हिन्दू परम्परा में स्वास्तिक को सर्वमंगल, कल्याणकारी, सर्वव्यापक स्वीकारा है। असीम शक्ति, सौन्दर्य चेतना तथा सर्व सुखकारी प्रतीक स्वास्तिक को माना गया है।

स्वास्तिक चिन्ह की बनावट ऐसी होती है कि वह दसों दिशाओं से विशेष ऊर्जा को अपनी ओर खींचता है इसलिए सर्वप्रथम शुभ कार्यों के लिए स्वास्तिक चिह्न बनाया जाता है। कहा गया है कि आम की लकड़ी और स्वास्तिक दोनों का संगम एवं आम की लकड़ी का स्वास्तिक उपयोग किया जाए तो इसका सुप्रभाव पड़ता है। जिस कोण में वास्तु दोष है उसमें उक्त लकड़ी का बना स्वास्तिक दोष हरण करता है। घर के प्रवेश द्वार तथा पूजा स्थल भी स्वास्तिक का अंकन प्रभावकारी होता है। सोना, चाँदी, तांबा अथवा पंचधातु से बना स्वास्तिक चौखट पर लगाने पर सुखद परिणाम मिलते हैं। आत्मतुष्टि के लिए रोली सिन्दूर तथा हल्दी से बनाये स्वास्तिक प्रभावपूर्ण होते हैं। पारिवारिक कलह, शमन तथा अशान्ति निवारण के लिए स्वास्तिक यंत्र रवि–पुष्य, गुरु–पुष्य तथा दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी संयंत्र के साथ लगाना अधिक लाभप्रद है। गाय के दूध और गाय के दूध से बने दही, घी, गोनीत, गोबर, पंचगव्य को समान अनुपात में गंगाजल में मिलाकर आम या अशोक के पत्तों से व्यापारिक केन्द्रों तथा औद्योगिक संस्थानों पर प्रतिदिन छिड़काव करने से ऋणात्मक ऊर्जा का संहार होता है।

प्राचीनकाल में किसी भी श्रेष्ठ कार्य का शुभारम्भ लिखना संभव नहीं था। अतः ऋषियों ने स्वास्तिक चिन्ह का निर्माण किया जो सुविधापूर्वक अंकित किया जा सके और कार्य सानन्द सम्पन्न हो। मान्यता है कि ईसाई धर्म का प्रतीक क्रॉस का भी प्राचीन स्वरूप स्वास्तिक ही है। छठी सदी में चीन के राजा 'वे' ने सूर्य के प्रतीक के रूप में स्वास्तिक को मान्यता प्रदान की थी। मान्यता है कि व्यापारियों यात्रियों तथा पर्यटकों के माध्यम से ही हमारा ये प्रतीक चिह्न विश्व के समस्त देशों में प्रसारित हुआ। चीन के तांग वंश के इतिहासकार कुंगत्से ने लिखा है 'प्रति वर्ष सातवें महीने के सातवें दिन मकड़ियों को लाकर उनके जाले में स्वास्तिक चिह्न बनवाते हैं। अगर किसी को जाले में पहले ही यह चिह्न बना हुआ मिल जाये तो उसे सौभाग्य सूचक माना जाता है।' तिब्बत में मृतकों के साथ स्वास्तिक प्रतीकों को रखने की परम्परा रही है। रेड इण्डियन्स इस प्रतीक को सौभाग्य सूचक मानते हैं तथा इसका प्रयोग आभूषणों में भी किया जाता है। जापान में प्राप्त भगवान बुद्ध की मूर्तियों पर भी यह चिह्न उकेरा गया है। आस्ट्रिा के संग्रहालय में 'अपोलो' देवता के मस्तक पर स्वास्तिक चिह्न है। प्राचीन शस्त्रागारों के सामने तथा अस्थि कलशों और मिट्टी के बर्तनों पर यह चिह्न अंकित है। २२०० वर्ष **शेष पृष्ठ 11 पर**

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों को मित्रों तथा रिश्तेदारों से अप्रत्याशित व्यवहार का सामना करना होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय अच्छा है जो लोग किसी परीक्षा में बैठेगें उनके लिए यह समय बहुत ही अच्छा है। जो लोग लम्बे समय से स्वास्थ्य समस्या से ग्रस्त हैं उनको लाभ मिलेगा।

वृष : इस सप्ताह नौकरी करने वाले जातकों को अपने बॉस से सावधान रहने की आवश्यकता है। साझेदारी के कार्यो में लाभ होगा। इस समय आपको आलस्य बहुत आयेगा। जो लोग यात्रा करने जा रहे है, वे अपने सामान का विशेष ध्यान रखें।

मिथुन : इस सप्ताह कुछ लोगों को आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होने के योग बन रहें है। इन दिनों आपको अनिद्रा की भी शिकायत हो सकती है। किसी मित्र का सहयोग आपको लाभ दिलायेगा। नौकरी पेशा वालों के लिए अपने ऊपर के कर्मचारी से बहुत अच्छा सहयोग मिलेगा।

कर्क : समय के साथ चलने की जरूरत है। परिवार में किसी से थोड़ा सा तनाव हो सकता है। कुछ लोग अनावश्यक खर्चो से परेशान रहेंगे। अतीत मे किये गये कार्यो का प्रतिफल प्राप्त होगा। आप जो कुछ भी करेंगे इस समय आपको लाभ ही लाभ होगा।

सिंह : इस सप्ताह कुछ लोगों के आमदनी के नये स्रोत बनने की संभावना है। अपने कार्य या व्यवसाय के अलावा धर्म कर्म में भी रूचि बढ़ेगी। इस समय पडोसियों से सावधान रहे अन्यथा समस्या खड़ी हो सकती है। कोई रूका हुआ कार्य आपका इस समय पूर्ण होगा।

कन्या : रूके हुये कार्यों में सफलता प्राप्त होगी किन्तु आय की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं है। धर्म व कर्म पर खर्च होगा। स्वभाव नकारात्मक रहेगा जिससे सन्तान सुख में बाधा आयेगी। कर्ज से बचना चाहिए। कुछ लोगों के कार्यक्षेत्र में बदलाव आयेगा।

तुला : इस सप्ताह नये कार्य नहीं करने चाहिए क्योंकि श्रम अधिक करना पडेगा और उसके मुकाबले लाभ कम मिलेगा। परिवार में पिता या बुजुर्ग के स्वास्थ्य में समस्या आ सकती है। स्वय भी स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न करें।

वृश्चिक : इस सप्ताह कुछ लोग शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को लेकर परेशान व चिन्तित रह सकते है। आर्थिक मामले में इस समय कुछ सुधार जरूर होगा। लेकिन धनाभाव की स्थिति बनी रहेगी।

धनु : इस सप्ताह श्रम अधिक करना पडेगा और उसके मुकाबले लाभ कम मिलेगा। राग–द्वेष के कारण आप स्वंय के दुशमन बन सकते है, इसलिए अपने स्वभाव में परिवर्तन लाने की कोशिश करें। अनावश्यक खर्चो पर नियन्त्रण करना होगा अन्यथा आर्थिक बजट गड़बड़ा सकता है।

मकर : इस सप्ताह कुछ लोगों को सन्तान के कार्यो से दुःख मिलेगा। मित्रों को शत्रु न बनाये अन्यथा धन की हानि होने की सम्भावना है। कार्य योजनाओं के निस्तारण के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। समय की पाबन्दी को ध्यान में रखकर किये गये कार्यो में सफलता प्राप्त होगी।

कुम्भ : इस सप्ताह आप–अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें अन्यथा अपनों से अनबन हो सकती है। छोटे बच्चों के माथे या सिर पर चोट लग सकती है। अतः सावधानी बरतें।

मीन : सामाजिक कार्यों से मान प्रतिष्ठा में लाभ होगा लेकिन आपसी विवादों से बचना ही हितकर रहेगा। आपके उत्साह में वृद्धि होगी और कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी। जितनी आप अपेक्षा करेंगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव।।

अर्जुन बोले– हे अच्युत! आपकी कृपा से मेरा मोह नष्ट हो गया और मैंने स्मृति प्राप्त कर ली है, अब मैं संशयरहित होकर स्थित हूँ, अतः आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।।७३।।

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः।
संवादमिममश्रोषमद्भुतं रोमहर्षणम्।।

संजय बोले–इस प्रकार मैंने श्रीवासुदेव के और महात्मा अर्जुन के इस अद्भुत रहस्ययुक्त, रोमांचकारक संवाद को सुना।।७४।।

व्यासप्रसादाच्छुतवानेतद्गुह्यमहं परम्।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम्।।

श्री व्यासजी की कृपा से दिव्य दृष्टि पाकर मैंने इस परम गोपनीय योग को अर्जुन के प्रति कहते हुए स्वयं योगेश्वर भगवान् श्री कृष्ण से प्रत्यक्ष सुना।।७५।।

तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः।
विस्मयो मे महान् राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः।।

हे राजन्। श्रीहरि के उस अत्यन्त विलक्षण रूप को भी पुनः पुनः स्मरण करके मेरे चित्त में महान् आश्चर्य होता है और मैं बार–बार हर्षित हो रहा हूँ।।७७।।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

हे राजन्! जहाँ योगेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण हैं और जहाँ गाण्डीव –धनुषधारी अर्जुन हैं, वहींपर श्री, विजय, विभूति और अचल नीति है– ऐसा मेरा मत है।।७८।।

हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 28 नवम्बर से 04 दिसम्बर 2018 तक

अध्यक्षीय

राजस्थान में लहर या पुरानी बयार

पिछले कई चुनावों से राष्ट्रीय राजनीति और अन्य राज्यों से प्रभावित हुए बिना राजस्थान के मतदाताओं ने दो दलों, भाजपा व कांग्रेस, को ही सत्ता सौंपी है यानी इन दो दलों में ही उसका विश्वास रहा है। यह भी सच है कि राजस्थान में पिछले सालों में अन्य राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों ने भी उपस्थिति दर्ज कराई है, लेकिन ज्यादा प्रभावी साबित नहीं हो सके। गौरतलब है कि अवसर के अनुकूल अपने हितों को साधते हुए प्रभाव क्षेत्र का विस्तार करना और सत्ता हासिल करना प्रत्येक राजनीतिक दल का मकसद रहता है। मौजूदा परिदृश्य पर जो राजनीतिक माहौल नजर आ रहा है, वह न केवल राजनीतिक विश्लेषकों को मशक्कत करने का अवसर प्रदान कर रहा है, बल्कि इन दलों को भी नई रणनीति के लिए प्रेरित कर रहा है। वर्ष २०१४ में केंद्र में भाजपा–नीत सरकार के आगमन के बाद, मोदी–शाह के नेतृत्व में जिस तरह से भारत के अधिकांश राज्य भाजपाई रंग में रंगे हैं, उससे न केवल राष्ट्रीय दलों की दुर्बलता और प्रभावहीनता स्पष्ट हुई है, बल्कि स्थापित क्षेत्रीय दल भी अस्तित्व बचाने की समस्या से ग्रसित हुए हैं। भारतीय राजनीति ऐसे दौर से पहले भी गुजर चुकी है, जब कांग्रेस का दबदबा पूरे देश में था और विपक्ष कांग्रेस के वर्चस्व को रोकने में लगातार असफल रहा। मौजूदा माहौल में भी नरेन्द्र मोदी अथवा भाजपा के बढ़ते कद और वर्चस्व को रोकने के लिए कांग्रेस न कई राज्यों में गठबंधनात्मक प्रयासों का सहारा लिया। कुछ राज्यों में हुए उप–चुनाव और कुछ अन्य में हुए आम चुनाव में गठबंधन राजनीति की सफलता ने स्पष्ट कर दिया है कि भाजपा भी हार सकती है। लेकिन ऐसी राजनीति की सबसे बड़ी कमजोरी इसकी अनिश्चितता होती है। क्षेत्रीय दल कमोबेश अपनी ताकत को अधिक आंकते हैं और राष्ट्रीय दल तय नहीं कर पाते कि कहां क्षेत्रीय दलों से हाथ मिलाया जाए और कहां नहीं। वर्ष २०१९ के लोकसभा चुनावों के मद्देनजर, इन दिनों पांच राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा के विरोध में गठबंधन के निर्माण में अलग–अलग स्वरूप देखने को मिल रहे हैं। राजस्थान की राजनीति में भी कुछ इस तरह की सुगबुगाहट देखी जा सकती है। दशकों से राजस्थान की राजनीति भाजपा व कांग्रेस के इर्द–गिर्द ही केन्द्रित रही है। बसपा, माकपा व अन्य दलों ने भी आंशिक उपस्थिति हमेशा दर्ज कराई है। राजस्थान में भाजपा को फिर सत्ता में आने से रोकने के लिए गठबंधन के दावों और प्रयासों की चर्चा राजनीतिक गलियारों में होने लगी है। पहले की तरह बसपा और वामदल तो मैदान में हैं। आम आदमी पार्टी भी मैदान में है। मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को लगता है कि प्रदेश में सत्ता विरोधी लहर है और इसका फायदा उसको मिलेगा। यह सही है कि राज्य स्तर के चुनावों में केन्द्रीय स्तर पर हुए गठबंधन ज्यादा प्रभावी नहीं होते। क्योंकि परिस्थितियां अलग होती हैं। ऐसे में राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों की क्षमता का आकलन किए बिना किसी तरह के कयास लगाना व्यर्थ होगा। राजस्थान की राजनीति में स्पष्ट है कि यह उन चुनिंदा राज्यों में शामिल हैं, जहां का आम मतदाता स्थानीय अथवा क्षेत्रीय दलों के प्रभाव में आए बिना दो प्रमुख राजनीतिक दलों, कांग्रेस व भाजपा, में ही विकल्प तलाशता आ रहा है। यानी भाजपा से नाराज हुआ तो कांग्रेस को और कांग्रेस से नाराज हुआ तो भाजपा को अपना समर्थन देता है। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि राजस्थान का मतदाता परंपरागत तौर पर स्थानीय, जातिगत, आर्थिक अथवा राष्ट्रीय मुद्दों के सम्बन्ध में कमोबेश किसी तीसरे विकल्प को बहुत ज्यादा अवसर नहीं देता। चुनावी प्रक्रिया में निर्दलीय का संदर्भ देखें तो दो तथ्य स्पष्ट रूप से व्यक्त किए जा सकते हैं। पहला यह कि राजस्थान के अधिकांश मतदाता दो दलीय प्रतिबद्धता से जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि विभिन्न चुनावों में निर्दलीय उम्मीदवार बड़ी संख्या में खड़े होते हैं, लेकिन कुछ ही जीत पाते हैं। इनमें भी अधिकतर दोनों प्रमुख दलों के बागी ही होते हैं। ऐसे में प्रदेश में अब तीसरे विकल्प की चर्चा तो शुरू हुई है, लेकिन यह कितना मजबूत होगा और क्या स्वरूप लेगा, यह देखना है। फिलहाल गठबंधन कौन–किससे करने वाला है, यही स्पष्ट नहीं है। राजस्थान में चुनावी ऊंट किस करवट बैठता है यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

सबरीमला आस्था, परम्परा और सिद्धांत की लड़ाई

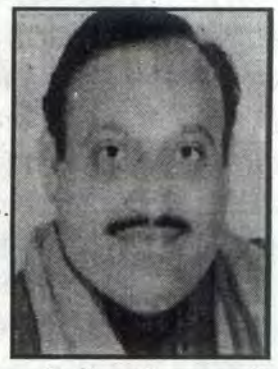

केरल के सबरीमला मंदिर को लेकर जो कुछ भी हो रहा है उससे लोगों की आस्था निश्चित रूप से चोटिल हो रही हैं। अगर समय रहते इसका समुचित समाधान नहीं हुआ तो हिन्दुओं में बड़े आन्दोलन की भूमिका बन सकती है। हाल ही में सभी उम्र की महिलाओं को गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति देने के अपने फैसले पर दायर पुनरीक्षण याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट सुनवाई को तैयार हो गया है। यह सुनवाई बाईस जनवरी को खुली अदालत में होगी। सभी ४६ पुनरीक्षण याचिकाओं को मंजूर कर लिया गया है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अनुमति देने के पांच जजों की पीठ के २८ सितंबर के अपने फैसले पर रोक लगाने से इंकार कर दिया है। यह फैसला चार एक के बहुमत से दिया गया था। इसका मतलब है कि इस महीने की १७ तारीख को सभी उम्र की महिलाओं को मंदिर में प्रवेश की अनुमति होगी। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि अगर सुप्रीम कोर्ट जनवरी में अपने फैसले को बदल भी देता है तो उसका क्या अर्थ होगा जबकि मंदिर की परंपराएं इसी महीने पलटी जा सकती हैं। केरल में इस मुद्दे पर जमकर सियासत हो रही है। जहां बीजेपी सबरीमला को लेकर बेहद आक्रामक है वहीं कांग्रेस की प्रदेश इकाई भी सुप्रीम कोर्ट के फैसले के विरोध में है। हालांकि कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी कह चुके हैं कि किसी भी उम्र की महिला के मंदिर में प्रवेश पर रोक नहीं होनी चाहिए लेकिन राज्य इकाई का मत अलग है। वहीं बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट को ऐसे फैसले नहीं करने चाहिए जिन्हें लागू न किया जा सके। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद सबरीमला मंदिर में रजस्वला महिलाओं के प्रवेश को रोकने के लिए बड़े पैमाने पर उग्र प्रदर्शन हुए हैं और कुछ महिला कार्यकर्ताओं को प्रवेश से रोका गया है तीन बार ऐसा हो चुका है। राज्य में लेफ्ट फ्रंट की सरकार है जो कहती है कि वो सुप्रीम कोर्ट का आदेश लागू कराने के लिए प्रतिबद्ध है। इस बीच सबरीमला को लेकर एक नई बहस भी शुरू हो गई है। केरल हाईकोर्ट में केरल सरकार ने कहा कि सबरीमला एक सेक्यूलर मंदिर है और यहां धर्म और जाति के आधार पर किसी को प्रवेश से नहीं रोका जा सकता है। यह बात उसने बीजेपी नेता टीजी मोहनदास की याचिका के जवाब में कही जिसमें गैर हिंदुओं के सबरीमलाई मंदिरों में प्रवेश पर रोक की मांग की गई है। लेकिन केरल सरकार का कहना है कि यह मंदिर सेक्यूलर है क्योंकि यहां सूफी संत वावर के नाम पर उनका मकबरा वावर नाड़ा है जो मंदिर के साथ ही बना है। कहा जाता है कि वावर भगवान अयप्पा के करीबी थे। राज्य सरकार के मुताबिक मुस्लिम वावर नाड़ा में प्रार्थना करते हैं और मंदिर में भी। सरकार ने कहा कि सबरीमलाई आने से पहले श्रद्धालु साठ किलोमीटर दूर वावर मस्जिद में प्रार्थना करते हैं और यह एक सेक्यूलर परंपरा है। यानी आने वाले दिनों में इस मंदिर को लेकर विवाद थमने वाला नहीं है। जिस तरह से सबरीमला में आस्था को लेकर सियासत हो रही है। माना जा रहा है कि आने वाले लोकसभा चुनाव से पहले बीजेपी इसे केरल जैसे महत्वपूर्ण राज्य में अपने पैर जमाने के मौके पर देख रही है। सवाल यह भी उठ रहे हैं कि आखिर सुप्रीम कोर्ट को किसी भी धर्म की परंपराओं में किस हद तक दखल देना चाहिए या फिर देना ही नहीं चाहिए? खैर! फिलहाल तो सबरीमला विवाद थमता नहीं दिख रहा है।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

योगासन जो दिल रखे दुरूस्त और डायबिटीज करें कन्ट्रोल

डॉ० अमृतराज

जानिए कुछ दिल की

दिल वो अंग है जो कभी एक–सा नहीं रहता, कभी सिकुड़ता है, कभी फैलता है। इससे उसकी धारण शक्ति घटती–बढ़ती रहती है। हृदय एक मिनट में ७२ बार रक्त ग्रहण करता है और उतनी ही बार उसे आगे धकेलता है। जब हृदय संकुचन करता है तो बड़े वेग से धमनियों में खून को धकेलता है, संकुचन और प्रसार से एक शब्द उत्पन्न होता है, जो "लुब–डप, लुब–डप" जैसी ध्वनि करता है। सामान्यतया युवा मनुष्य का हृदय १ मिनट में ७०–७५ बार धड़कता है। बाल्यावस्था में जल्दी–जल्दी धड़कता है। जन्मकाल में यह प्रति मिनट १४० बार धड़कता है। बच्चा ज्यों–ज्यों बड़ा होता है, त्यों–त्यों यह संख्या घटती जाती है। ६ से १२ मास के बच्चे के हृदय की धड़कन १०५ से ११५ प्रति मिनट रहती है। २ से ६ वर्ष के बच्चे की धड़कन ६० से १०० प्रति मिनट, ७ से १४ वर्ष में ७५ से ८५ प्रति मिनट हो जाती है।

हमारा दिल बहुत नाजुक अंग है जो खुशी में तीव्रता से और अच्छे तरीके से कार्य करता है लेकिन जब दुःखी होता है तो इसकी गति धीमी पड़ जाती है और दर्द से पीड़ित हो जाता है तो आइए, कुछ ऐसा करें कि अपने दिल को सेहतमन्द और तन्दुरूस्त बनाएँ, कुछ विशेष योगासनों के जरिए और हाई कोलेस्ट्रॉल, हाई ब्लडप्रेशर, लो ब्लडप्रेशर, एंजाइना, हार्ट अटैक जैसी समस्याओं से अपने दिल को सदा बचाकर रखें।

हृदय अपना काम २४ घंटे जीवनवपर्यन्त करता है–यह काम *वह सुविधापूर्वक तथा शांत भाव* से कर सके, इसका एक ही उपाय है कि रक्त शुद्ध हो और ले जाने तथा वापस लाने वाला मार्ग अर्थात् धमनियों तथा शिराओं को साफ रखा जाए। हृदय अपना यह काम पूरी जिम्मेदारी से निभाता रहे, इसके लिए उसकी शक्तिशाली मांसपेशियों को ईंधन की आवश्यकता होती है। यह ईंधन उस तक पहुँचाती है, पैंसिल के आकार की दो मुख्य कोरोनरी धमनियाँ और उनसे निकली हुई बहुत–सी छोटी–बड़ी शाखाएँ वे ही हृदय का जीवन हैं। उनसे ही उसे ऑक्सीजन और ग्लूकोज रूपी ईंधन मिलता है। समस्या तब पैदा होती है, जब इन धमनियों में कहीं रूकावट आ जाती है, इसका सबसे बड़ा कारण धमनियों की भीतरी दीवारों में वसा ;थ्जद्ध की परत जमा होना, इनमें कभी–कभी यों ही सिकुड़न आ जाती है, जिससे हृदय को उसकी पूरी खुराक नहीं पहुँच पाती। जिस समय दिल पर अधिक काम का जोर पड़ता है, तब उसके लिए यह स्थिति असहनीय हो जाती है और दिल तिल–मिलाकर अपनी रुग्ण अवस्था की सूचना बाहर भेजने लगता है। अलग–अलग लक्षणों के रूप में हृदय की धमनियों का इस तरह अवरूद्ध हो जाना ही "हृदय रोग" कहलाता है।

दिल को दुरुस्त कैसे रखें?

योग, व्यायाम करने, सैर करने, शरीर को विश्राम देने, काम के साथ–साथ मनोरंजन को भी अपने जीवन का अंग बनाने, जरूरत के अनुसार नींद लेने, शुद्ध–सात्विक, सुपाच्य, कम घी–तेल–मंसालों का भोजन करने, धूम्रपान, मदिरापान, तम्बाकू से दूर रहने, तनाव–क्रोध, ईर्ष्या से दूर रहने, विषय–वासनाओं को मर्यादित रखने, अपने फेफड़े तथा गुर्दों को स्वस्थ रखने आदि से यह दिल दुरुस्त रहता है। हमारा शरीर एक इकाई है जिसमें प्रत्येक अंग–प्रत्यंग आपस में सम्पर्क में हैं, एक भी अंग में खराबी आने पर दूसरा अंग भी प्रभावित होता है। अतः आपके प्रत्येक अंग स्वस्थ रहें और दिल मजबूत बना रहे, इसी के लिए कुछ खास योगासनों के विषय में आपको जानकारी दे रहे हैं। इन योगासनों को आप अपनी दिनचर्या में स्थान दें और फिर देखें जीवन कितना मधुर और बीमारियों से मुक्त रहेगा।

उष्ट्रासन

विधि : पहले वज्रासन पर बैठें, प्रारम्भ में घुटनों एवं एड़ियों में कुछ अन्तर रखें। दोनों हाथों से दोनों पैरों की एड़ियाँ पकड़ें, धीरे–धीरे घुटनों को सीधा करें और कमर, सिर, ग्रीवा को पीछे की ओर मोड़ें। अन्तिम स्थिति में घुटने सीधे एवं सीना ऊपर को उठा हुआ, सिर पीछे की ओर होगा। श्वास सामान्य चलता रहेगा। यह आसन १५ सेकण्ड से १ मिनट तक कर सकते हैं। धीरे–धीरे आसन को छोड़िए।

नोट : यह आसन घुटनों पर खड़े होकर धीरे–धीरे पीछे झुकते हुए भी किया जा सकता है।

लाभ : इससे हृदय, फेफड़े तथा सम्पूर्ण श्वास–संस्थान नीरोग होता है, दुर्बलता नष्ट होती है, धीमी कार्यक्षमता बढ़ती है।

शलभासन

विधि : पेट के बल लेट जाएँ, ठुड्डी भूमि पर टिकाएँ, दोनों हाथ कमर के साथ सीधे रखकर हथेलियाँ ऊपर की ओर रहनी चाहिए। पैर लम्बे, तलवे ऊपर की ओर होने चाहिए। पूरा श्वास भरकर ठोढी, हाथों एवं छाती पर शरीर का भार संभालते हुए नाभि से पिछला भाग धीरे–धीरे ऊपर उठाइए, पैर मिले हुए और पंजे तथा घुटने एक सीध में रहेंगे। पेडू–प्रदेश ;च्मसअपब त्महपवदद्ध तक ही शरीर ऊपर उठना चाहिए। जब श्वास टूटने लगे तो धीरे–धीरे आसन को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार के क्रम को ४–८ चक्र तक कर सकते हैं।

लाभ : इस आसन से फेफड़े, हृदय, छोटी–बड़ी आँत, लीवर, पिछले भाग को ऊपर उठाने के पश्चात् ऊपर का भाग पेट, ग्रीवा और सिर भी ऊपर उठाएँ। इस समय केवल नाभि तथा पेडू के आसपास का भाग ही भूमि से लगा रहेगा। श्वास छोड़ते हुए धीरे–धीरे पहली स्थिति में आ जाना चाहिए।

लाभ : ग्रीवा, पसलियाँ, फेफड़े, हृदय सभी अंग सबल, सुदृढ़ व पुष्ट होते हैं। विलोम ग्रन्थि का नियमन करके डायबिटीज को कन्ट्रोल करके, गुर्दे और अधिवृक्क व हृदय का पोषण करके हाई कोलेस्ट्रॉल, ब्लड प्रेशर का नियमन करता है। स्त्रियों के गर्भाशय और जरायु के सम्पोषण तथा विकास के लिए भी उत्तम है।

भस्त्रिका प्राणायाम

विधि : भस्त्रिका संस्कृत में लुहार की धौंकनी को कहते हैं। लुहार या सुनार एक गति से जिस प्रकार धौंकनी धौंकते हैं, उसी प्रकार श्वास क्रिया करनी चाहिए। जोर–जोर से श्वास लेना और निकालना भस्त्रिका प्राणायाम की विशेषता है। पद्मासन या सिद्धासन पर बैठकर शरीर, गर्दन, सिर को सीधा रखें, हथेलियाँ घुटनों पर ही रखें, सुनार–लुहार की धौंकनी के समान श्वास लें और निकाल दें, साथ ही छाती फुलाएँ तथ संकुचित करते जाएँ। श्वास अन्दर भरते समय उदर बाहर होगा तथा बाहर निकालते समय उदर अन्दर को संकुचित कर लें। एक के बाद दूसरा श्वास बिना रूके निरन्तर लेते रहें। नौ बार से इक्कीस बार तक यह क्रिया करें, यह एक प्रक्रिया है। ऐसा आप अपनी सुविधानुसार करें।

चेतावनी : इस प्राणायाम से पसीना निकलेगा। यह व्यायाम कठिन है। इसलिए सिर चकराने लगे तो रूककर विश्राम करें। प्रत्येक प्राणायाम के बाद २ मिनट विश्राम करें।

लाभ : नाक, दिल, छाती, फेफड़े की व्याधियाँ दूर होती हैं। दमा, क्षय रोग दूर होता है। नाड़ियाँ शुद्ध होती हैं, जठराग्नि प्रदीप्त होती है।

डायबिटीज

पाचन संस्थान विशेष कर क्लोम ग्रन्थि के ठीक प्रकार से कार्य न करने से अक्सर यह रोग होता है। ज्यादातर कार्बोहाइड्रेट्स, वसा, शर्करा (ज्यादा मीठा) खाने के कारण यह बीमारी हो जाया करती है। हमने जितना कार्बोहाइड्रेट्स खाया है उसी के पाचन से शरीर में ग्लूकोज बनता है, यह ग्लूकोज शरीर की मांसपेशियों तथा तंतुओं में दग्ध होकर शरीर में ताप तथा शक्ति उत्पन्न करता है। **जब किसी शारीरिक विशृंखलता के कारण पेशियों और तंतुओं के ग्लूकोज का शोषण करने की क्षमता नष्ट हो जाती है, तो ग्लूकोज रक्त में जमा होने लगता है और फिर मूत्र के रास्ते बाहर निकलता है। यह स्थिति ही डायबिटीज कहलाती है।**

मुख्य कारणों में : मानसिक अवसाद, क्रोध, तनाव, डिप्रेशन, स्नायुमंडल की दुर्बलता, पाचन शक्ति की क्षमता से कमी, मेटाबॉलिज्म ठीक न होना, लीवर की अस्वस्थता आदि कारणों से यह रोग होता है।

मुख्य लक्षणों में : शुरूआत में यह रोग पकड़ में नहीं आता। रोगी को शरीर में शक्ति की कमी महसूस होती है, मूत्र की मात्रा बढ़ जाती है, जख्म या चोट जल्दी नहीं ठीक होते, त्वचा में एग्जिमा की तरह समस्या हो जाती है, पसीना बहुत आता है, प्यास खूब लगती है, मूत्र के आसपास चींटियाँ आने लगती हैं। हाथ–पैरों में सुबह के समय झनझनाहट–सी लगती है, चक्कर से आते हैं।

मुख्य जाँच

- ❖ प्रतिदिन मूत्र में ग्लूकोज, रक्त में ग्लूकोज की जाँच (ग्लूकोमीटर से)
- ❖ प्रति सप्ताह ग्लूकोज स्तर (ग्लूकोमीटर से)
- ❖ प्रत्येक महीने ग्लूकोज (पैथोलॉजी से)

शेष पृष्ठ 11 पर

संसार को सुन्दर बनाने की आचारसंहिता है धर्म

✍ हृदयनारायण दीक्षित

सुप्रीम कोर्ट ने धर्म, जाति, भाषा के आधार पर वोट माँगने को गलत बताया। भारत का धर्म प्रत्यक्ष वैज्ञानिक व्यवस्था है। संपूर्ण प्रकृति से आत्मीय व्यवहार का नाम धर्म है। प्रकृति की शक्तियाँ सुनिश्चित नियमों में चलती हैं। वैदिक पूर्वजों ने इस नियम को ऋतु कहा है। मनुष्य को भी नियमों के अनुसार चलना प्रकृति और मनुष्य तथा मनुष्य और सभी मनुष्यों के मध्य आचार संहिता का नाम धर्म है। देव उपासना आदि परम्परागत कर्मकांड हैं। ईश्वर आस्था निजी विश्वास है। धर्म में इसकी बाध्यता नहीं। कठोपनिषद् का नचिकेता युवा है। यम ने उसे 'सत्यधृति' कहा। वह सत्यनिष्ठ है लेकिन धर्म के यथार्थवादी रूप को जानता है। धर्म सम्पूर्णता के प्रति मनुष्य का सत्यनिष्ठ आदर्श व्यवहार है। उसने पूछा जो धर्म से पृथक है, अधर्म से पृथक है, भूत भविष्य से भी पृथक है, वह मुझे बताइए। (१–२–१४) यहाँ धर्म लोकजीवन की आचार संहिता है, धर्म और अधर्म की सारी कार्यवाही देश और समय के भीतर है। नचिकेता समय और देशकाल की आचार संहिता धर्म–अधर्म और भूत भविष्य से परे किसी अज्ञात तत्त्व 'सत्य' का जिज्ञासु है। उपलब्ध ज्ञान का सम्मान और सतत् जिज्ञासा यहाँ धर्म का भाग है।

दुनिया के किसी पंथ या मजहब के अनुयायियों ने अपनी आस्था या पंथिक मजहबी मान्यताओं से जिरह नहीं की। विज्ञान और दर्शन अंतरिक्ष का भी अनुसंधान कर रहे हैं लेकिन पंथिक मजहबी विश्वासों में दैवी घोषणाएँ ही सत्य मानी जाती हैं। भारत में धर्म और आस्था विश्वास से निरंतर वाद–विवाद और संवाद की परम्परा है। वैदिक साहित्य ऐसे विवाद–संवाद से भरापूरा है। परमसत्ता पर भी प्रश्न और प्रति प्रश्न है। यहाँ लोक खुलकर बोलता है, धैर्य से सुनता है और प्रश्न प्रतिप्रश्न करता है। धर्म सत्यनिष्ठ जिज्ञासा जीवनशैली है। यही सत्य है। सत्य और धर्म पर्यायवाची हैं। धर्म स्थित आचार संहिता नहीं है। यहाँ समाज की तमाम शक्तियाँ धर्म को भी प्रभावित करती रही हैं।

वैदिक काल का धर्म आनंद मगन करने वाला है। उत्तर वैदिक काल में यज्ञ से जुड़े कर्मकांड हैं लेकिन तत्त्वज्ञान की ऊँचाइयाँ कर्मकांडों को भी चुनौती देती हैं। रामायण काल के धर्म में मर्यादा है। श्रीराम इसी मर्यादा के महानायक हैं लेकिन महाभारत काल का धर्म अवनति में है। गीताकार ने बहुत खूबसूरत शब्द प्रयोग किया है धर्म की ग्लानि। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा 'जब–जब धर्म की ग्लानि होती है, तब–तब धर्म संस्थापन के लिए अवतार होते हैं'। श्रीराम और

श्रीकृष्ण में भारी फर्क है। श्रीराम रामायण काल में प्रचलित धर्म को मजबूती देते हैं। दुख उठाकर भी मर्यादा का पालन करते हैं लेकिन श्रीकृष्ण महाभारत काल के प्रचलित धर्म को चुनौती देते हैं।

ऋग्वेद में धर्म की चर्चा कम है। मनुष्य प्रकृति के निकट है। सूर्य अस्त होते हैं, मनुष्य सो जाते हैं। ऊषा आती है। ऋषियों के अनुसार वह सबको जगाती है। वैदिक समाज के जागरण और निद्रा प्राकृतिक हैं। ऋग्वेद के समय सभा और समितियाँ हैं। सभा में सभ्य ही जाते हैं। सभा सभेय है। सामाजिक विकास के क्रम में तमाम रूढ़ियाँ आई। महाभारत में सभा के भीतर भी जुआ है। महाभारत काल के युधिष्ठिर धर्मराज हैं लेकिन जुए में पत्नी द्रौपदी को भी दांव पर लगाते हैं। मन प्रश्न करता है कि महाकवि ने उन्हें धर्मराज क्यों कहा? ऋग्वेद में पत्नी पूरे परिवार की 'साम्राज्ञी' है। महाभारत में वह वस्तु और पदार्थ है। द्रौपदी इस धर्म को चुनौती देती है। लेकिन सभा में विराजमान द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म जैसे महानुभाव प्रचलित धर्म से ही जुड़े हैं। द्रौपदी तत्कालीन राजाओं को धर्मभ्रष्ट बताती है, भरतवंश के नरेशों का धर्म निश्चय ही भ्रष्ट हो गया है।

राजाओं आप लोग क्या समझते हैं? मैं धर्म के अनुसार जीती गई हूँ या नहीं। (सभापर्व ६७–४१–४२) महाभारत का काल धर्म भ्रष्ट होने का ही समय है।

धर्म लिखित व्यवस्था नहीं था। यह सबको धारण करता है। सब उसे धारण करते हैं। धर्म पालन में स्वतंत्रता है। इसलिए भारत में हरेक मनुष्य का अपना धर्म है। द्रौपदी के मन में धर्म की दूसरी कल्पना है। युधिष्ठिर और भीष्म आदि के मन में बिल्कुल दूसरी। भीष्म के उत्तर में गोलमाल है 'धर्म का स्वरूप अति सूक्ष्म होने के कारण मैं तुम्हारे प्रश्न का ठीक विवेचन नहीं कर सकता।' जुआ अधर्म है, जुए के खेल में बेईमानी और भी बड़ा अधर्म है लेकिन पितामह धर्म के सूक्ष्म स्वरूप की बहानेबाजी के साथ और भी नई चालबाजी करते हैं। कहते हैं धर्मराज युधिष्ठिर धन सम्पदा से भरी पृथ्वी त्याग सकते हैं किन्तु धर्म नहीं छोड़ सकते। इन्होंने स्वयं ही हार मान ली है। (वही ६७–४७–४६) 'भीम युधिष्ठिर के जुआ कर्म को गलत बताते हैं और कहते हैं द्रौपदी की दुर्दशा के लिए मैं आपकी दोनों बाहें जला दूँगा।' (सभापर्व ६८–६) यहाँ भीम युधिष्ठिर से श्रेष्ठ दिखाई पड़ते हैं।

धर्म परिवर्तनशील आचार संहिता है। वैदिक काल में उत्तरवैदिक काल के बीच समय का लंबा अंतराल है। वैदिक काल में व्यक्तिगत संपदा का विकास हो रहा था लेकिन परम्पराएँ भी साथ–साथ पुष्ट हैं। उत्तर वैदिक काल में अन्तर्विरोध उभरे हैं। यज्ञ और पूजा से लाभ–हानि की बातें भी आ गई हैं। इसी समय दर्शन का विकास भी हुआ है। उपनिषद् दर्शन का आकाश छूना इस समय की विशेषता है। रामायण काल का धर्म मर्यादा पालन में खिला है। वैदिक

शेष पृष्ठ 10 पर

नई कार्यकारिणी का गठन हुआ

बुलन्दशहर ४ नवम्बर। हिन्दू महासभा भवन, नई दिल्ली के निर्माता, देवता स्वरूप–भाई मतिदास के वंशज, भाई परमानन्द की १४४ वीं जयन्ती पर आज, हिन्दू महासभा के सहयोगी संगठन, सावरकरवाद प्रचार सभा की बुलन्दशहर नगर कार्यकारिणी का गठन इस प्रकार हुआ–

संस्थापक	**- इन्द्रदेव गुलाटी**
संरक्षक	**- डा० गिरीश चन्द्र गुप्त**
अध्यक्ष	**- डा० विनोद कुमार गुप्ता**
उपाध्यक्ष	**- अशोक माथुर**
महामंत्री	**- सुनील कुमार आर्य**
प्रचार मंत्री	**- लोकेश बंसल**
वित्त मंत्री	**- सतीश चन्द गोयल**
कार्यालय मंत्री	**- राकेश कुमार**
आय-व्यय निरीक्षण मंत्री	**- शैलेन्द्र श्री वास्तव**

बैठक में उन सब का आभार किया गया जिन्होंने कैलेण्डर (२०१८–१६) लेते समय दिल खोलकर आर्थिक सहयोग दिया। यह जानकारी भी दी गई कि नए कैलेण्डर (२०१६–२०) अप्रैल से पहले मार्च में आ जाएंगे क्योंकि ६ अप्रैल से विक्रमी सम्वत् २०७६ प्रारम्भ हो रहा है। नए अध्यक्ष ने निर्देश दिए हैं कि प्रति सप्ताह जो डाक आएगी उसे सबसे पहले कार्यालय मंत्री राकेश कुमार को देनी होगी फिर वे यथा योग्य को वितरित किया करेंगे।

देशद्रोह में फंसे कश्मीरी छात्रों का निलंबन वापस

प्रतिक्रिया

१. ११ अक्टूबर को, आतंकी बना छात्र, कश्मीर में सेना के हाथों मारा गया।
२. उसके मरने की खबर आने पर, ए एम यू में देश विरोधी नारे लगे।
३. पुलिस ने दो छात्र नेताओं पर देश द्रोह का मुकदमा दर्ज किया है।
४. ए एम यू ने दो छात्रों को निलम्बित किया तथा तीन छात्रों को कारण बताओ नोटिस जारी किया।
५. १२०० कश्मीरी छात्रों की धमकी से घबड़ा कर निलम्बन वापिस ले लिया गया है।
६. उत्तर प्रदेश दूरदर्शन चैनल के अमिताभ अग्निहोत्री ने अपनी समीक्षा में ए एम यू की प्रशंसा करते हुए इसे राष्ट्रीय महत्त्व का बताया है क्योंकि इसके छात्र विद्वान तथा नेता बने हैं।
७. शेख अब्दुल्ला भी इसी की देन है जिसने जम्मू–कश्मीर के विलय को विवादास्पद बना दिया है और वहां अघोषित युद्ध की स्थिति बनी रहती है।
८. स्वतन्त्रता संघर्ष के समय यही विश्वविद्यालय, विभाजन समथर्कों का प्रमुख केन्द्र रहा था।
९. वहां जिन्ना की तस्वीर भाजपा भी नहीं हटवा सकी है जबकि केन्द्रीय सरकार सात हजार करोड़ रुपए प्रति वर्ष खर्च करती है।
१०. अतः मांग की जाती है कि 'इसे' दी गई स्वायत्तता वापिस ली जाए और इसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अधीन ही रखा जाए।

आई० डी० गुलाटी, बुलन्दशहर

बैंक ऑफ चाइना पर रहें सजग

बीते ४ जुलाई, २०१८ को भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने चीन के सबसे बड़े बैंक, बैंक ऑफचाइना को लाइसेंस जारी कर भारत में व्यवसाय करने की अनुमति दे दी है। बताया जा रहा है कि बैंक ऑफचाइना को यह लाइसेंस हाल ही में शंघाई सहयोग संगठन ने भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग के साथ बैठक में हुए फैसले के अनुसार दिया गया है। यह दूसरा चीनी बैंक है, जिसे भारत में व्यवसाय करने का अधिकार मिला है। इससे पहले इंडस्ट्रियल एंड कमर्शियल बैंक ऑफचाइना लिमिटेड को भारत में बैकिंग का लाइसेंस मिला हुआ है। बैंक ऑफचाइना चीन का एक सरकारी बैंक होने के साथ–साथ चीन का दूसरा बड़ा बैंक भी है। १९४२ से पहले इस बैंक को करेंसी जारी करने का भी अधिकार था। इस बैंक की परिसंपत्तियां १५८.६ बिलियन डॉलर की हैं। इसकी कई ग्राहक कंपनियां पहले से ही भारत में काम कर रही हैं, इसके कारण इस बैंक का भारत के प्रति आकर्षण स्वाभाविक ही था। बैंक ऑफचाइना ने जुलाई २०१६ म लाइसेंस के लिए आवेदन किया था। इसके लिए पहले सैद्धांतिक रूप से गृह मंत्रालय ने हामी भर दी थी, लेकिन बाद में (शायद चीन की आक्रामक नीति के कारण) उस अनुमति को वापस ले लिया गया था। अब जबकि भारत और चीन के रिश्तों में सकारात्मक बदलाव आया है, आवेदन को स्वीकार कर भारत सरकार ने इस बैंक की भारत में शाखाएं खोलने की अनुमति दी है। इस बैंक के शेयर शंघाई और हांगकांग शेयर बाजारों में खरीदे –बेचे जाते हैं। हालांकि, डोकलाम विवाद के थमने के बाद चीन के साथ टकराव का कोई नया मामला सामने नहीं आया है, लेकिन भारत और चीन के बीच तल्ख रिश्ते किसी से छुपे हुए नहीं है। चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के लिए पहले से ही विश्वभर में चर्चा का केंद्र रहा है। भारत ने चीन की विस्तारवादी नीति को आगें बढ़ाने वाली महत्वाकांक्षा बीआरआई (बेल्ट रोड इनीशिएटिव) परियोजना का कड़ा विरोध पहले ही किया हुआ है।

भारत का मानना है कि वह चीन की विस्तारवादी नीति ही है, जो पाकिस्तान के कब्जे में भारत की भूमि पर वह अपनी बेल्ट रोड बना रहा है। भारत ने न केवल इस परियोजना से अपने आप को अलग रखा है, बल्कि कई मंचों पर इसका विरोध भी किया है। इधर भारत में चीनी कंपनियां अपना वर्चस्व बनाने में लगी हुई हैं। कई इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में भी चीनी भागीदारी भारी मात्रा में है। उधर चीन से आ रहे आयातों के कारण हमारे देश के उद्योग–धंधे नष्ट हो रहे हैं और बेरोजगारी बढ़ रही है। कुल मिलाकर चीन द्वारा सस्ते माल को डंप करने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था को भारी नुकसान हो रहा है। दूसरी ओर चीन से भारत को भयंकर सामरिक खतरा भी है। भारत के पड़ोसी देशों–पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, वर्मा और श्रीलंका समेत कई देशों में वह अपनी उपस्थिति बढ़ा रहा है। पाकिस्तान के साथ तो उसके रिश्ते भारत के प्रति पाकिस्तान की नफरत को फैलाने में सहयोग तक दे रहे हैं। श्रीलंका में एक बंदरगाह को बनाने के लिए पहले चीन द्वारा भारी ऋण दिया जाना और बाद में चीनी सरकार द्वारा उस पर कब्जा जमा लिया जाना, और ऐसे अनेक मामले यह इंगित कर रहे हैं कि चीन का इरादा इस महाद्वीप में अपना सामरिक प्रभुत्व जमाने का है। बैकिंग आज के युग में अर्थव्यवस्था की रीढ़ के समान है। यह सही है कि आज विश्व के सभी देशों के बैंक एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। उसी क्रम में भारत और चीन के बैंक भी जुड़े हुए हैं, लेकिन अभी तक चीनी बैंकों की भारत में उपस्थिति नाम मात्र ही थी। लेकिन, बैंक ऑफ चाइना के भारत में आगमन के बाद यह उपस्थिति काफी बढ़ जायेगी। भारत सरकार कई प्रकार से चीन से भारत में माल की डंपिंग को रोकने और चीनी कंपनियों की भारत में सामरिक दृष्ट से महत्वपूर्ण परियोजनाओं में आने से रोकने का भरसक प्रयास कर रही है, ताकि चीन से भारत का व्यापार घाटा कम हो सके। इस दृष्ट से सौ से ज्यादा चीनी उत्पादों के आयात पर एंटीडंपिंग ड्यूटी लगायी गयी है, चीन से आने वाले आयातों पर तकनीकी प्रतिबंध लगाये जा रहे हैं।

इसके अतिरिक्त उन क्षेत्रों में चीनी कंपतियों को प्रतिबंधित करने का प्रयास भी हुआ है, जहां चीन अपने देश में भारतीय कंपनियों को आने की इजाजत नहीं देता। लेकिन, भारत सरकार के चीन से व्यापार घाटे को कम करने के तमाम प्रयासों को बैंक ऑफचाइना प्रभावित कर सकता है। चीनी आयातकों को सुविधाएं देना, चीनी कंपनियों को भारत में काम करने हेतु वित्त उपलब्ध कराना, भारत में चीनी आयातों को और बढ़ावा देने का काम भी कर सकता है। याद रखना होगा कि बैंक ऑफचाइना चीनी सरकार के स्वामित्व में है। यदि चीन की सरकार चाहे, तो बैंक ऑफचाइना के माध्यम से रुपये को विनिमय दर में भी उथल–पुथल ला सकती है और भारतीय अर्थव्यवस्था को भीषण नुकसान पहुंचा सकती है।

इन खतरों के मद्देनजर बैंक ऑफचाइना को दी गयी अनुमति शेष पृष्ठ 11 पर

सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती दिनांक ३१ अक्टूबर २०१८

✍ डा० विनोद कुमार गुप्ता

१५ अक्टूबर के दैनिक जागरण के विज्ञापन में प्रधान मंत्री तथा *गुजरात के मुख्यमंत्री की ओर से छपा है:– "अखण्ड भारत के निर्माता को शाश्वत आदरांजलि"*

❖ यह १०० प्रतिशत गलत है। १९४७ में देश का विभाजन सरदार पटेल की भी सहमति/स्वीकृति से हुआ था फिर उन्हें अखण्ड भारत का निर्माता कैसे कहा जा सकता है? वे भी भारत को खण्डित करने के दोषी हैं।

❖ उन्हें लौह पुरुष कहना उचित है क्योंकि उन्होंने बहुत कुशलता से ५६१ देसी रियासतों का सफलता पूर्वक विलय खण्डित भारत में कराया था।

❖ उनका पूरा नाम है–सरदार वल्लभ भाई जावेर भाई पटेल

❖ उनकी नई दिल्ली स्थित कोठी की सड़क का नाम था– औरंगजेब रोड़

❖ वे मृत्युपर्यन्त (१५–१२–१९५०) में उपप्रधानमंत्री एवं गृह मंत्री रहे।

❖ उन्होंने सख्त व्यवहार करके हैदराबाद और जूनागढ़ रियासतों का विलय भारत में कराया था क्योंकि इनके नवाब, विलय पाकिस्तान से चाहते थे।

❖ गांधी, नेहरू और मौलाना आजाद के विरोध करने पर भी, अपने सोमनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार कराकर डा० राजेन्द्र प्रसाद से उद्घाटन कराया था।

❖ आप देश विभाजन के समर्थक इसलिए हो गए थे क्योंकि समझौते में पहला प्रावधान था कि देश के १०० प्रतिशत मुस्लिमों को पश्चिमी और पूर्वी पाकिस्तान में भेजा जाएगा।

❖ मुस्लिम प्रेमी गांधी–नेहरू ने गुप्त समझौता आपस में कर लिया था कि सारे मुस्लिमों को नहीं भेजेंगे। इसकी जानकारी पटेल को नहीं मिली थी।

❖ कांग्रेसियों का प्रचण्ड बहुमत पटेल को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में था लेकिन गांधी ने लोक तन्त्र की हत्या करके जबर्दस्ती नेहरू को बनवा दिया।

❖ विश्व की सबसे ऊंची १८२ मीटर की प्रतिमा सरदार सरोवर बांध में लगा दी गई है। इसका लोकार्पण आज प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने किया है।

❖ १८२ मीटर की ऊंचाई इसलिए रखी गई है क्योंकि गुजरात विधानसभा में १८२ विधायक हैं।

❖ पत्रकारों द्वारा पूछे गए प्रश्न के उत्तर में आपने स्पष्ट रूप से कहा था कि पूरे देश में केवल एक मुस्लिम ही राष्ट्रवादी है जिसका नाम है–जवाहर लाल नेहरू।

❖ वे जम्मू–कश्मीर के मुख्यमंत्री पद पर शेख अब्दुल्ला को बनाने के प्रखर विरोधी थे। वे नेहरू की कश्मीर नीति को देश विरोधी मानते थे।

❖ प्रतिमा स्थल केवड़िया गांव, नर्मदा, गुजरात में है। शीघ्र ही यह पर्यटन स्थल के रूप में विकसित हो जाएगा जिसे देखने काफी पर्यटक आया करेंगे।

❖ भारत सरकार ने नाम "स्टैच्यू आफ यूनिटी" रखा है जबकि नाम स्टैच्यू आफ आइरन लीडर रखना ज्यादा अच्छा रहता।

भारतीय अर्थव्यवस्था की चुनौतियां

यकीनन आर्थिक सुधारों के कारण भारत के सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) में तेज वृद्धि हुई है। जीडीपी के आधार पर भारत दुनिया की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है, लेकिन

इस समय अर्थव्यवस्था के सामने कई चुनौतियां हैं। डॉलर के मुकाबले कमजोर होते रुपये और कच्चे तेल के बढ़ते दामों ने भारत की चिंताएं बढ़ा दी हैं। सार्वजनिक बैंकों में बढ़ता खराब कर्ज (एनपीए) मार्च २०१८ तक चिंताजनक स्तर पर पहुंचते हुए १०१२५ लाख करोड़ रुपये हो गया है। ठोस प्रयासों से जहां अर्थव्यवस्था को और ऊंचाई पर पहुंचाया जा सकेगा, वहीं आम आदमी की खुशहाली भी बढ़ सकेगी।

बीते ११ जुलाई को प्रकाशित विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष २०१७ के अंत में भारत की जीडीपी २१६ लाख करोड़ डॉलर (१७८१५६ खरब रुपये) हो गयी। पांच अन्य अर्थव्यवस्थाओं में अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी और ब्रिटेन हैं। विश्व बैंक का कहना है कि पिछले कुछ वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था में अच्छा सुधार हुआ है। यदि भारत आर्थिक और कारोबार सुधारों की प्रक्रिया को वर्तमान की तरह निरंतर जारी रखता है, तो वह वर्ष २०१८ में ब्रिटेन को पीछे करते हुए दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन सकता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भी अपनी नयी रिपोर्ट में कहा है कि वर्ष २०३० तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बन सकता है। भारत के वित्त मंत्रालय द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट में कहा गया है कि देश मे जिलेवार कृषि–उद्योग के विकास, बुनियादी ढांचे में मजबूती एवं निवेश मांग के निर्माण में यथोचित वृद्धि करने के लिए जो रणनीति बनायी गयी, उससे २०२५ तक भारतीय अर्थव्यवस्था का आकार ५,००० अरब डॉलर तक पहुंच जायेगा, जो अभी २,५०० अरब डॉलर के करीब है। चीन में २०१८ में विकास दर ६१६ फीसदी और २०१६ में ६१४ फीसदी रहने का अनुमान है। जबकि आईएमएफका कहना है कि २०१८ में भारत की विकास दर ७१४ फीसदी रहेगी तथा २०१६ में ७१८ फीसदी हो जायेगी। जीडीपी में प्रत्यक्ष कर का योगदान बढ़ा है। आर्थिक उदारीकरण के बाद अर्थव्यवस्था को चमकाने में भारतीय मध्यम वर्ग की भी विशेष भूमिका है।

देश की विकास दर के साथ–साथ शहरीकरण की ऊंची वृद्धि दर के बलबूले भारत में मध्यम वर्ग के लोगों की आर्थिक ताकत तेजी से बढ़ी है और भारत का मध्यम वर्ग लंबे समय तक भारत में अधिक उत्पादन, अधिक बिक्री और अधिक मुनाफे का स्रोत बना रहेगा। देश के सामने कई चुनौतियां भी हैं। एक बड़ी चुनौती तुलनात्मक रूप से कम प्रतिव्यक्ति आय से संबंधित है। देश में आर्थिक असमानता चिंताजनक है। देश में अमीरों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। लेकिन आम आदमी की आमदनी तेजी से नहीं बढ़ रही है। इन चुनौतियों का समाधान करने पर ही अर्थव्यवस्था में तेजी आयेगी। इसलिए बुनियादी ढांचा मजबूत करना होगा। निवेश में वृद्धि करनी होगी। नयी मांग का निर्माण करना होगा। विनिर्माण के क्षेत्र में देश को आगे बढ़ाना होगा। युवाओं को विकास के लिए कौशल प्रशिक्षण से सुसज्जित करना होगा। मेक इन इंडिया योजना को गतिशील करना होगा। उन ढांचागत शेष पृष्ठ 11 पर

विश्व में भारत जैसा सर्वधर्म समभाव कहीं नहीं है

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय एवं प्रज्ञा प्रवाह के संयुक्त तत्वाधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य विषय "भारत में समावेशीकरण का राष्ट्रीय विमर्श" रहा। इस विषय पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल जी ने कहा कि ये विषय अपने आप में बेहद बृहद है। आज के सन्दर्भ में ये विषय बेहद ही आवश्यक है जो समाज को सही राह पर ले जाने में मदद करेगा। हिंसा किसी भी समस्या का हल नहीं और इसलिए महान डॉ. भीमराव आंबेडकर ने हमेशा कहा, संघर्ष करो–एक रहो, लेकिन हिंसा नहीं।

उन्होंने संविधान निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह समाज के एकीकरण के लिए आजीवन कार्य करते रहे। उनका जीवन अपने आप में प्रेरणा है। उच्च शिक्षा विश्व के बेहतरीन विश्वविद्यालय से हासिल करने के बावजूद उन्होंने आराम की जिन्दगी नहीं जीने का फैसला किया। उन्होंने भारत में निचले तबके के जिए आजीवन काम किया। उन्होंने संघर्ष करने के बावजूद समाज में हर तबके के लिए कुछ करने का अपना प्रयास जारी रखा। डॉ. आंबेडकर पर कोई अगर ये आरोप लगाता है कि उन्होंने जाति विशेष या धर्म विशेष के लिए ही काम किया तो उन्हें देश का संविधान देखना चाहिए जो सबके लिए समान है, किसी एक के लिए नहीं।

डॉ. कृष्णगोपाल जी ने समाज से आहवान करते हुए कहा कि हमें निचले स्तर पर जाकर अपने बन्धुओं का दर्द समझना होगा और उन तक सही बातों को पहुंचाना होगा। विदेशी शक्तियां और कुछ राजनीतिक शक्तियां गलत तरीके से समाज को उकसा रही हैं। जो समाज और देश के लिए ठीक नहीं है। हिंसा हल नहीं है, हिंसा होने से समाज की गति विपरीत दिशा में जाती है। भारतवर्ष में हुए संतों ने हमेशा भेदभाव के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी। जिसमें उनको सफलता भी मिली क्योंकि समाज उनके साथ था। सिर्फ कानून बदलने से कुछ नहीं हो सकता है और ना ही केवल सरकारें कर सकती हैं। इसमें समाज को भी साथ देना होगा। "सर्व समावेशी" होना, देश को अपने आप में ही परिभाषित करता है। विश्व के कई अन्य देश हैं, लेकिन भारत जैसा सर्वधर्म समभाव कहीं नहीं है। पूर्वोत्तर में करीब २०० जातियां थीं, इसके बावजूद वो एकता के सूत्र में बंधी हुई थीं। जिसे अंग्रेजों द्वारा तोड़ने की कोशिश भी की गई। हमारे समावेशी विचार के कारण ही लाखों की संख्या में आए बाहरी आक्रमणकारी भारत में ही समा गए, जबकि हमने किसी पर आक्रमण नहीं किया। कार्यक्रम का उद्घाटन संबोधन केन्द्रीय समाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री थावरचंद गहलोत ने किया। कार्यक्रम का आयोजन इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के मैदानगड़ी स्थित बाबा साहेब आंबेडकर सभागार में किया गया। **डॉ. कृष्णगोपाल जी**

कश्मीर में कश्मीरी पण्डितों की दशा रावण की लंका में सीता के समान है

प्रो. चमनलाल सप्रू

१६६२ में अटलजी कश्मीर घाटी में पधारे। उनके साथ प्रो. बलराज मधोक भी थे। संघ ने कुछ वरिष्ठ स्वयंसेवकों, बुद्धिजीवियों आदि की एक बैठक का आयोजन किया। सर्वप्रथम अटल जी ने उपस्थित जनों की व्यथा–कथा सुनी। कश्मीरी मुस्लिम नेताओं एवं अधिकारियों द्वारा कश्मीरी पण्डित समाज के साथ भेद–भाव तथा उपेक्षा की दारुण कहानियाँ सुनकर अटलजी ने अपने सम्बोधन में कहा–"कश्मीरी पण्डितों की दशा रावण की लंका में सीता के समान है।" मैंने कश्मीर से निष्कासित कश्मीरी पण्डितों की व्यथा–कथा पर आधारित कश्मीरी कविताओं के हिन्दी अनुवाद, मौलिक हिन्दी कविताएँ, डोगरी तथा कन्नड़ में लिखी ६१ कवियों की कविताओं के संकलन हेतु आशीर्वाद स्वरूप कुछ लिखने का अनुरोध किया। उन्होंने अपनी कविता दे दी, जो इस प्रकार है–

काश्मीर के नन्दन कानन को किसने है सुलगाया,
किसने छाती पर, अन्यायों का है अम्बार सजाया?
आँख खोलकर देखो घर में भीषण आग लगी है,
धर्म, सभ्यता, संस्कृति खाने, दानव क्षुधा जगी है,
हिन्दू कहने में शरमाते, दूध लजाते, लाज न आती,
घोर पतन है, अपनी माँ को, माँ कीने में फटती छाती!
जिसने रक्त पिलाकर पाला, क्षण भर उसका वेष निहारो,
उसकी सूनी माँग निहारो, बिखरे बिखरे केश निहारो,
जब तक दुःशासन है, वेणी कैसे बँध पायेगी?
कोटि-कोटि संतति है, माँ की लाज न लुट पायेगी।

अपने प्रिय छात्र डॉ. महाराज कृष्ण भरत ने अपने काव्य संग्रह 'फिरन में छिपाये तिरंगा' लिखकर मुझे दिखाया शेष पृष्ठ 11 पर

मीराबाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा काव्य यात्रा

✍ डॉ. वेद प्रकाश सिंह प्रकाश

मीराबाइ का जन्म काल तथा जीवन सम्बन्धी अन्य विवरण पर विद्वानों में एकराय नहीं है। यहां हम उनके व्यक्तित्व पर अन्तःसाक्ष्य और बाह्य साक्ष्य द्वारा प्राप्त सभी सामग्री को मिलाकर जो देखेंगे वही रखने का प्रयास करूंगा, क्योंकि विद्वानों में बहुत बहुत भिन्न्ता है। इसीलिए किसी को बिना प्रमाणिकता सिद्ध किये बिना मान लेना न्याय संगत नहीं होगा। मीरा के पदों में कुछ पद ऐसे हैं जिनसे उनके जन्म स्थान के सम्बन्ध में पता चलता है। जैसे–

१. राठौर घर जन्म लियो, मीरा नामकहायो।

२. विष का प्याला राणा जी ने भेज्यो हो मेड़तनी ने पायो!

३. राणा जी अब न हूँगी तोरी हटकी।

इससे हमें मीरा के सम्बन्ध मं मालूम होता है कि उनका जन्म राठौरों की मेड़तियां के प्रवर्तक राव दूदा जी के वंश में हुआ था। वे राव दूदा जी की पौत्री तथा रनसिंह की कन्या थीं उन्होंने संवत १५१८ में मेड़ता में अपना राज्य स्थापित किया था। यह शाखा जोधपुर राजवंश से अलग होकर स्थापित हुई थी। रतन सिंह को राव दूदा जी नेराज्य की ओर से उनके जीवन निर्वाह के लिए कुड़की आदि बारह गांव प्रदान किये थे। यहीं पर मीराबाई का जन्म संवत् १५५५ विक्रमी के आसपास हुआ। कर्नल टाड ने मीरा की जन्मतिथि १५६१ मानी है। श्रीकृष्ण लाल १५५५ से १५६० के मध्य मानते हैं। परसुराम शास्त्री भी इसी मत को मानते हैं।

बाल्यावस्था : मीरा जी का बाल्यकाल में ही गिरधर से प्रेम हो गया था। ऐसा उनके पदों से सिद्ध हो गया। कहा जाता है कि एक बार एक साधु उनके पिता के अघर आकर ठहरे थे। मीरा ने उनके पास गिरधर की मूर्ति देखी तो वे बहुत अधिक उन पर आकर्षित हो गई। जब वह साधू चलने लगा तो मीरा गिरधर की मूर्ति मांग उठी पर बाबा ने नहीं दीतो बहुत रोई। मीरा की उस मूर्ति से इतनी लगन लगी कि उन्होने खाना–पीना तक त्याग दिया। ऐसे समय में इस साधू को रात में स्वप्न हुआ कि तू जाकर गिरिधर की मूर्ति मीरा को जाकर दो–साधू मूर्ति देकर चला गया। मीरा जी हाथ धोई जब देखन लागी गिरधर हाथ बिकानी। आखिरकार मीरा जी गिरधर की हो गई। एक

कहावत है कि एक बार मीरा ने अपनी माँ से पूछा माँ मेरी शादी किससे होगी। इस पर माँ ने हंसकर कह दिया कि बेटी तेरी शादी गिरधर से होगी। जो तेरे पास ही है। इस बात से मीरा को दृढ़ विश्वास हो गया कि मेरा सांवला सलोना पति गिरधर ही हैं।

वैवाहिक एवं वैधता जीवन : टाड के अनुसार मीरा का विवाह राणा कुंमार से होना माना है। उन्होंने लिखा–Rao Duda had three sons besides Maldeo namely first Raimall Second Bir Singh, who founded Aimer

लेकिन अब यह सब गलत सिद्ध हो चुका है। दूदा जी की मृत्यु के पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र वीरमदेव ने अठारह वर्ष की अवस्था में मीराबाई का विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के बड़े बेटे कुमार भोजराज से हुआ। वे अपनी ससुराल जाकर मेड़वती के नाम से जानी गई। उनका वैवाहिक जीवन बहुत सुख से बीता परन्तु उनका यह सुखी अधिक समय तक नहीं टिक सका शादी के कुछ ही दिनों बाद राजा भोज का देहान्त हो गया। वैसे भी उनका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रह पाता क्योंकि उनका तो एक अलौकिक पति पहिले से ही था।

मीरा को गिरिधर मिलिया जी, पूरब जन्म के भाग।
सुपणे में म्हारे परण गया जी, हो गया बचन सुहाग।।

एक लेखक ने यह जगह लिखा है कि सुहागरात को ठाकुर जी को शयनगृह में सिंहासन पर मीरा ने विराजमान कर दिया और कहा कि प्रभो अपनी दासी को बचाइये। साधारण मनुष्य भी अपनी भार्या की रक्षा करते हैं। आप तो त्रिलोकीनाथ हैं आप अपनी प्रतिष्ठा पर ध्यान दीजिए। राणा शराब पीकर आये और ठाकुर जी को देखकर वापस लौट गये। इनका संभाषण मीरा जी के साथ कभी नहीं हुआ। इसके साथ ही भोज की मृत्यु से अल्पकाल से ही मीरा के वैधव्य से ही मीरा के वैधव्य को दुख उठाना पड़ा। मीरा की भक्ति और अधिक तीव्र हो गई। अब उन्होंने सारे सांसारिक बंधनों को तोड़कर भगवान की आराधना प्रारम्भ कर दी।

कीर्तन भजन में मग्न : बावर के साथ कनवाह युद्ध में उंनके पिता एवं श्वसुर भी काम आये। मीरा को जब कोई आश्रय नहीं रहा तब उन्होंने सारा समय एवं मन भगवान की भक्ति में लगा दिया। पैरों में घुंघरूं बांध करके भगवान की मूर्ति के आगे नाचने गाने लगी। भगवत् दर्शन हेतु वे बाहर के मंदिरों में जाने लगी। धीरे धीरे उनकी भक्ति की ख्याति दूर दूर तक फैल गई, जिसके फलस्वरूप दूर दूर के साधु–सन्यासी मीरा के पास आने लगे। यह बात राजवंश की मर्यादा के विरूद्ध थी। अतः महाराणा के उत्तराधिकारी करन तथा उनके देवर ने उन्हें समुझाया पर मीरा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

अत्याचार : फिर क्या था मीरा पर अत्याचार प्रारम्भ हो गये। इसका वर्णन मीरा ने एक पद में किया– वे कहती हैं–

विष का प्याला राणा ने भेजा,
अमृत कर आरोगी रे,
पेट्या वासुक भेज्या जीवो छै
मीति डारो हार।
नाग गले में पहिरिया म्हारे
यहां भजो उजार।
सूल सेज राणा ने भेज्यो,
दीजो मीरा सुलाय।
सांझ भई मीरा सोनण लागी,
मानो फूल बिछाय।

मीरा ने राणा द्वारा किये गये सारे अत्याचारों की महाविष अमृत समझकर पर लिया। सर्प को तुलसी की माला समझ गले में डाल लिया और शूली पर सुखपूर्वक सो गई किन्तु फिर भी उनका बाल भी बांका नहीं हुआ।

मेवाड़त्याग : मीरा राणा के अत्याचारों से दुखी होकर मेवाड़ का त्याग कर दिया, वहां से वे अपने पीहर शेष पृष्ठ 11 पर

चन्द्रप्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

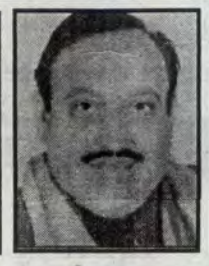

मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

वीरेश त्यागी
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

मोहनलाल वर्मा
प्रांतीय संयोजक

भ्रष्ट नेता बार बार हिन्दू महासभा इस बार

१७ ग्वालियर दक्षिण विधान सभा से अखिल भारत हिन्दू महासभा युवा संघर्षकारी प्रत्याशी लक्ष्मण सोनी को रोड़ रोलर का बटन दबाकर भारी बहुमत से विजयी बनाने की अपील।

हिन्दू महासभा में १७ ग्वालियर दक्षिण विधान सभा के मतदाताओं से अपील की है कि आपने झूठे वादे करने वाले व भ्रष्टाचार नेताओं को विजयी बनाया इस बार हिन्दू महासभा के संघर्षकारी इतिहास को दोहराते हुए हिन्दू महासभा जैसे पवित्र संगठन के युवा प्रत्याशी लक्ष्मण सोनी को चुनाव चिन्ह रोड़ रोलर के आगे वाला बटन दबाकर भारी बहुमत से विजयी बनाकर सन् १६५२ के इतिहास को दोहराने की अपील की।

मो० : 8120032007

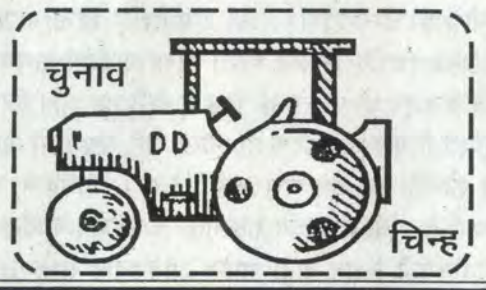

बर्बाद नहीं करें औषधि है पानी

✍ अभय कुमार जैन

पानी हमारी जान है, जीवन की पहचान है।
जिस देश में जल है, उस देश का कल है।
जन-जन का यही नारा है,
पानी सबसे प्यारा है।
जल जीवन से प्यारा है, यही हमारा नारा है।

वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम की रिपोर्ट में ऐतिहासिक रूप से यह पहली बार हुआ है, जब ग्लोबल रिस्क रिपोर्ट में वित्तीय जल संकट को बड़ा और संवेदनशील मुद्दा माना गया है।

संयुक्त राष्ट्र ने विश्व के सभी देशों को चेतावनी देते हुए कहा है कि यदि पानी की बर्बादी को जल्द ही नहीं रोका गया, तो विश्व गम्भीर जल संकट से गुजरेगा। दुनिया की आबादी जिस गति से बढ़ रही है, उसको देखते हुए पानी की खपत में निरन्तर इजाफा होगा।

एक परिवार को जितना पानी चाहिए, उतना एक कूलर पी जाता है। एक गाँव को जितना पानी चाहिए, उतना एक कलकारखाने को चाहिए। हम सबका यह नैतिक, धार्मिक व राष्ट्रीय कर्तव्य है कि पानी के बचाव के लिए संभव उपाय करना चाहिए।

पानी बिना रह नहीं सकते, सिर्फ बचा सकते हैं : एक मग या एक गिलास में पानी लेकर मंजन करें, वॉशबेसिन में नल खोलकर ब्रश करते हैं, इससे एक व्यक्ति के ब्रश में ही ५–७ लीटर पानी लगना साधारण बात है, शेव करते समय भी एक मग में पानी लेकर शेव करें। अधिकांश लोग नल या फव्वारा चलाकर नहाते हैं, ये तरीका भी पानी फिजूल खर्च करने का है। एक बाल्टी में पानी लेकर स्नान करें। किसान भाइयों को चाहिए कि जब सिंचाई के लिए पानी छोड़ें, तब नहाएँ। हाँ इस बात का ध्यान रखें कि साबुन वाला पानी सिंचाई में नहीं जाए। कपड़े धोने के बाद वाला पानी एकत्रित कर लें, इस पानी से फर्श व वाहन धोना चाहिए। वाहन धोने के लिए पाइप का इस्तेमाल नहीं करें, ना ही मग से पानी डालें इसके विपरीत एक टब या बाल्टी में पानी लेकर कपड़े से धोएँ, फर्श की सफाई बाल्टी में पोंछा लगाकर करें, काफी पानी बच जाएगा। बर्तनों की सफाई करते समय एक बड़े टब में पानी लेकर उसमें बर्तनों को डालकर धोएँ। एक बर्तन में पानी लेकर उसमें कुछ देर सब्जियाँ भिगोएँ ताकि कुछ ही देर में वे अच्छी तरह साफ हो जाएँ। किसान भाई भी बाजार से जब सब्जियाँ लाएँ, तो उन्हें साफ करने के लिए कुएं पर जो हौद होता है, उसमें सब्जियों को डाल दें, ताकि मिट्टी इत्यादि साफ हो जाएगी तथा पानी की भी बचत होगी। गाँव, नगरों में जब बरसात का पानी आता है, तो पाइप से काफी पानी एक साथ निकलता है, इसे भी ड्रम या बाल्टी में एकत्रित कर, दिनभर घरेलू कार्य के उपयोग में लिया जा सकता है। इससे घरेलू उपयोग में होने वाला पानी बाद में काम आ जाएगा। गर्मी व जाड़े के दिनों में रसोई से निकलने वाला पानी गमलों में डाला जा सकता है। पेड़–पौधों में पानी शाम के समय दें ताकि कम पानी से अधिक नमी रहे। भवन निर्माण के समय सीमेंट के काम में तरी आवश्यक होती है, भवन निर्माण का कार्य बरसात के दिनों में करवाएँ ताकि स्वतः ही अच्छी तरावट हो जाए। इसके अलावा पहले तराई ऊपर से करें ताकि पानी नीचे की तरफ आए। इसके अलावा बारदाने के टुकड़े रखकर उन्हें भिगोएँ, कम पानी में अधिक समय तक तरावट रहेगी। अपने पालतू पशुओं को भी कपड़े धोने के बाद वाले पानी से नहलाएँ। संभव हो तो खुली जगह पर नहलाएँ, जहाँ पानी की जरूरत हो, ताकि पानी गार्डन में जाए या जहाँ फुटपाथ हो, ताकि वहाँ सफाई हो सके। सार्वजनिक स्थानों–स्टेशन, प्याऊ, कार्यालयों, प्रतिष्ठानों पर नल खुले हों तो बंद करें। पुश वाले नल लगाएँ। घरों व अन्य स्थानों पर लीकेज हो तो ठीक करवाएँ। पाइप लाईन फूटने पर तत्काल संबंधित विभाग को सूचित कर, दुरुस्त करवाएँ। बाहर जाने से पूर्व अपने नल बंद करके जाएँ। पानी की बर्बादी भी रुकेगी तथा नुकसान भी नहीं होगा। टंकियों में फुटबाल लगा होना चाहिए, ताकि टंकी भरते ही नल स्वतः ही बंद हो जाए। होटलों में प्रायः ग्राहकों को आते ही पानी का गिलास प्रस्तुत किया जाता है, जहाँ तक हो सके, सभी जगह–घरों, होटलों व सार्वजनिक स्थानों पर छोटे गिलासों का प्रयोग करें। जब भी घरों में टंकियाँ, कूलर साफ किए जाते हैं, तो काफी पानी व्यर्थ जाता है। इस पानी को पेड़–पौधों व गमले में लगे पौधों में प्रयोग करें। हमारे नीति–निर्धारकों, राजनेताओं, अधिकारियों को चाहिए कि पाठ्यक्रमों में इस प्रकार की जानकारी दें ताकि वह पानी बचाने हेतु प्रेरणा ले सकें।

पानी औषधि भी है : इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिसन के मुताबिक महिलाओं को रोजाना लगभग २ से ७ लीटर व पुरुषों को लगभग ३ से ७ लीटर पानी पीना चाहिए, इससे सेहत ठीक रहेगी, त्वचा को पोषण मिलेगा और त्वचा में कसावट रहेगी। एक नए अध्ययन से यह बात सामने आई है कि पानी पीते रहने से सिरदर्द और माइग्रेन की तेजी को कम करने में मदद मिलती है। नीदरलैंड की मास्टरचिट विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने पाया कि प्रतिदिन करीब ७ गिलास पानी पीने से दर्द में राहत मिलती है। सिरदर्द से परेशान रहने वाले रोगियों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार आता है।

सुबह–सुबह बिना कुछ खाए, एक गिलास पानी कई बीमारियों से छुटकारा दिला सकता है। सिर्फ एक गिलास पानी हार्ट अटैक का खतरा ५० प्रतिशत घटा सकता है। हार्ट अटैक का खतरा ज्यादातर सुबह होता है। सोते वक्त भी शरीर काम कर रहा होता है। बस उसकी गति धीमी होती है, शरीर की हर क्रिया के लिए पानी की जरूरत होती है, जागने के दौरान पानी की जरूरत होने पर दिमाग तुरंत सक्रिय हो जाता है और प्यास महसूस होती है, लेकिन ७–८ घंटे लगातार सोने के दौरान शरीर अपनी जरूरत का पानी ब्लड से लेता है। ऐसे में पानी की कमी से ब्लड गाढ़ा हो जाता है और ये गाढ़ा ब्लड हार्ट अटैक का खतरा बढ़ा देता है। सोने से कुछ देर पहले पीया सिर्फ एक गिलास पानी हार्ट अटैक के खतरे को कम कर देता है, ये मशहूर अमरीकी जर्नल इपिडेमिलाजी के शोध से साबित हुआ है। पानी की कमी से सिर्फ ब्लड ही गाढ़ा नहीं होता, बल्कि ब्लड प्लाज्मा भी गाढ़ा हो जाता है, इससे ब्लड में कई तरह की जटिलताएँ पैदा हो सकती हैं। यही वजह हार्ट अटैक में खतरे को बढ़ाती है। अतः प्यास लगने पर इसकी अनदेखी न करें, ये दिल के लिए खतरनाक हो सकता है। अथर्ववेद में लिखा है–जल ही दवा है जल–रोग को दूर कर करता है। यह सब रोगों का संहार करता है। पानी को दुनिया में सबसे पुराना डॉक्टर माना जाता है। प्राकृतिक चिकित्सक कहते हैं कि पानी केवल शरीर की सफाई ही नहीं करता, बल्कि अच्छी सेहत भी देता है। त्वचा रोगों, कब्ज, अनिद्रा, थकान, दर्द जैसे कई अन्य रोगों में जल चिकित्सा बेहद असरदार होती है।

जल के औषधीय उपयोग : शीतलता, तरलता, हल्कापन एवं स्वच्छता इसके प्राकृतिक गुण हैं। भ्रम, क्रांति, मूर्च्छा, पिपासा, तन्द्रा, वमन, निद्रा को दूर करना, शरीर को बल देना, उसे तृप्त करना, हृदय को प्रफुल्लित करना, शरीर के दोषों को दूर करना, कब्ज इत्यादि आंतरिक मूल पदार्थों को निकाल देना, शरीर के विजातीय तत्वों को निकाल फेंकना, आमाशय, गुर्दा, त्वचा को क्रियाशील बनाना, शरीर में खाद्य पदार्थ को काम देना आदि जल के कुछ गुण हैं।

पानी कब्जनाश की सरल औषधि है। प्रातःकाल उठते ही जल पी लें, पूरे दिन शरीर में तरावट रहती है। उठते ही ऊषा पान कीजिए, फिर थोड़ा सा टहलें, कब्ज जड़ से चली जाएगी। प्रातःकाल हाथ–मुँह धोकर, मुख में जल भरकर मटकी के जल से या ताजे जल से आँखें धोने पर निद्रा, उनिंदापन, थकान, लाली आदि दूर होती है। गर्मी के दिनों में तो आँखों पर ३–४ बार छीटें मारें। घर से बाहर जाते समय भरपूर पानी पीकर निकलें, लू लगने का डर नहीं रहेगा। लू लगने पर या बुखार तेज होने पर सिर व हाथ–पैरों पर कपड़ा भिगोकर रखें। कहीं कट जाने पर खून बहता हो, तो वहाँ ठंडे पानी की पट्टी बाँध दें, उसे पानी डालकर तर करते रहें। जल जाने पर जले हुए स्थान को ठंडे पानी में तब तक डुबोकर रखें, जब तक जलन शांत ना हो जाए। रात को सोने से पहले हाथ–पैर–मुँह अच्छी प्रकार धो लें, इससे अच्छी नींद आती है। खेलकूद, व्यायाम व परिश्रम के अन्य कार्य करने से शरीर में पानी की कमी हो जाती है, अतः आधा घंटा विश्राम करने के बाद पानी पीएँ। गर्मी में पानी की कमी रहने से अपच, अजीर्ण, बदहजमी हो जाती है। अतः रात को सोने से पहले पर्याप्त पानी पीना चाहिए। आँखों में धूल के कण जाने पर आँखों को मसले नहीं, आँखों को स्वच्छ पानी से अच्छी तरह धोएँ तथा एक बर्तन में स्वच्छ पानी लेकर उसमें आँखें डुबो लें, कचरा निकल जाएगा। गले में खराश हो या गला खराब हो, तो गुनगुने पानी में नमक डालकर

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

पं० नाथूराम गोडसे को श्रद्धाजंलि, गोडसे को भारत रत्न देने की मांग

मुजफ्फरनगर, १५ नवम्बर २०१८, आज शिव चौक स्थित प्रदेश कैम्प कार्यालय पर अखिल भारत हिन्दू महासभा द्वारा पं० नाथूराम गोडसे की पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धाजंलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष योगेन्द्र वर्मा ने किया, इस अवसर पर प्रदेश महिला अध्यक्ष साक्षी वर्मा, विनोद शर्मा (विधि प्रकोष्ठ महामंत्री), एड. अरूण वर्मा, सुरेन्द्र मित्तल, बबलू शर्मा सहित हिन्दू महासभा के कार्यकर्ता उपस्थित थे। इस अवसर पर श्रद्धाजंलि सभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने केन्द्र सरकार से अमर हुतात्मा पं० नाथूराम गोडसे को भारत रत्न देने की मांग की। उन्होंने कहा कि गोडसे ने हिन्दुस्तान के और टुकड़े होने से बचाने के लिये एवं हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिये मोहन दास करमचन्द गांधी की हत्या की थी। उन्होंने कहा कि व्यक्ति से राष्ट्र बड़ा होता है। प्रदेश अध्यक्ष योगेन्द्र वर्मा ने कहा कि पं० गोडसे के योगदान को देश कभी भी नहीं भुला सकता है। वे राष्ट्रवादियों के प्रेरणाश्रोत थ। उपस्थित जनों ने नाथूराम गोडसे की प्रतिमा का माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धाजंलि अर्पित किया। हिन्दू महासभा नेताओं ने तिलक कर नाथूराम गोडसे को सम्मान प्रकट किया। संवाददाताओं से बात करते हुए हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं प्रदेश अध्यक्ष योगेन्द्र वर्मा ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्य नाथ से मुजफ्फरनगर शहर का नाम लक्ष्मीनगर करने एवं मेरठ शहर का नाम पं० नाथूराम गोडसे नगर करने की मांग की।

शेष पृष्ठ 1 का

अमर हुतात्मा पण्डित नाथूराम.....

विशुद्ध राष्ट्र की मूल भावना के रूप में किया है इस कार्य हेतु आपने महान गुरूओं ब्रहमलीन महन्त दिगविजयनाथ जी, ब्रहमलीन महन्त श्री अवैद्यनाथ जी को सच्ची श्रद्धाजंलि दी है। आप बधाई के पात्र हैं और हम इस खुले पत्र के माध्यम से आपसे करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए गाजियाबाद को दिग्विजय नगर, हापुड़ को महन्त अवैधनाथ नगर

व मेरठ को गोडसे नगर नाम देकर हिन्दू जाति को उपकृत करें। आपके इस कार्य का हिन्दू जाति कोटि–कोटि वर्षों तक यशोगान करती रहेगी। इस कार्यक्रम में मुख्यरूप से भरत राजपूत, देशबन्धु गुप्ता, तुषार गुप्ता, रोति शर्मा, दीपक शर्मा, अशोक गुप्ता, गोपाल, रिषि कुमार आदि शामिल हए।

शेष पृष्ठ 8 का

मीराबाई का व्यक्तित्व.....

मेड़ता चली गई परन्तु वहां भी वह ज्यादा दिन नहीं टिक सकी। वहां से वे तीर्थ यात्रा को निकल पड़ी। सबसे पहिले वे वृन्दावन में निवास किया। जब तक मीरा पर निर्गुण पंथ का प्रभाव था तब तक वे सगुण भक्ति में मन लगाया। कहा जाता है मीरा ने स्वामी जीव गुसाई से मिलने को चिट्ठी भेजवाई कि मैं तो अब तक समझती थी कि वृन्दावन में श्रीकृष्ण ही एक मात्र पुरुष हैं बाकी लोग गोपियां हैं यानी स्त्रियां हैं। अब मुझे ज्ञात हो गया कि भगवान के सिवा अपने को पुरुष समझने वाले यहां और भी हैं। इस पर स्वामी जी बहुत प्रभावित हुए और वे कहने लगे कि वे नंगे पैर ही मिलने को दौड़े आये। वहां से मीरा द्वारिकापुरी जा पहुंची वहां से रणछोर जी की भक्ति में लीन हो गई।

मृत्यु : कहा जाता है कि मीरा के घर से चले जानें के बाद मेड़ता और मेवाड़ इन दोनों स्थानों से पता लगाने के लिए आदमी भेजे जाने लगे। वे पता लगाते द्वारिका पहुंचे परन्तु मीरा ने जाने को मना कर दिया। बहुत आग्रह करने पर उन्होंने कहा मैं अपने रणछोर से आज्ञा ले आऊं तब बताऊं। वे रणछोर जी के पास चली गई पर अन्दर से वापस ही नहीं आईं। ऐसा कहा जाता है कि वे मूर्ति में ही समा गई। इस प्रकार संवत् १६०३ के आसपास मीरा का इहलौकिक शरीर समाप्त हो गया।

मीरा का व्यक्तित्व- मीरा जी का व्यक्तित्व की विशेष जानकारी कोई नहीं है केवल कृष्ण भक्ति में अपना सारा जीवन सपर्पित कर दिया। उपरोक्त घटनाओं से केवलयही सिद्ध होता है जब तक जीवित रही उन्हें कष्ट ही कष्ट मिला–इसलिए उन्होंने प्रभु भक्ति का सहारा ले जीवित रही। एक बार जो सोचा कि यह करना चाहिये तो वे उसी में रम गई। मीरा जी अति तन्मय निडर तथा निरंकुश स्वभाव की साध्वी प्रतीत हुई।

रचनायें : मीरा जीं के ग्रन्थों में बहुत कुछ सीख मिलती है।

१. नरसी जी से माहरी : इसे कुछ लोग मीरा कृत नहीं मानते क्योंकि पुस्तक में यत्र–तत्र दासी उवाच, मीरा उवाच आदि शब्द मिलते हैं डा० सावित्री सिन्हा का कथन है कि उत्कृष्टता की कसौटी पर निम्न होने के कारण उसे मीरा की कृति नहीं मानना न्यायसंगति नहीं है।

२. सोरठ के पद : इसमें मीरा के अतिरिक्त जागदेव तंथा कबीर के भी पद मिलते हैं।

३. राग गोविन्द : इस ग्रन्थ के अस्तित्व के विषय में अभी तक सन्देह बना है।

४. गीत गोविन्द : इस रचना पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है कहते हैं इसमें राणा कुंभा द्वारा टीका को ही मीरा की टीका मान लिया है।

५. मीराबाई मलार : यह भी कोई स्वतंत्र रचना नहीं है।

६. गर्वागीत : गुजराम में गर्वागीत प्रसिद्ध है, जिसके आधार पर मीरा की रचना माना गया है। गर्वागीत माधुर्य भावना से ओत–प्रोत है।

७. मीराबाई का साहित्यिक महत्व पदों के कारण ही हैं पदों की संख्या भी किसी को ज्ञात नहीं।

शेष पृष्ठ 1 का

रोहिंग्या मददगारों पर सरकार.....

प्रवासियों को भारत में संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी का दर्जा दिलाने सहित अन्य दस्तावेजी सबूत मुहैया कराकर शरणार्थी का दर्जा दिलाने में मदद करने का आरोप है। हाल ही में दिल्ली पुलिस की विशेष शाखा ने इन संगठनों की कथित संदिग्ध गतिविधियों के आधार पर केन्द्र और दिल्ली सरकार के गृह विभाग को इस बारे में सूचित किया था। गृह विभाग द्वारा दी गयी सूची में चिन्हित संगठनों के उन पदाधिकारियों की भी जानकारी दी गयी है जो अवैध रोहिंग्या शरणार्थियों की कथित तौर पर अवांछित मदद कर रहे हैं। सूची में अंतरराष्ट्रीय सामाजिक संगठनों सहित दस अन्य एनजीओ शामिल हैं। इसके अलावा संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायोग के साथ मिलकर शरणार्थी कल्याण के क्षेत्र में कार्यरत दो कथित एनजीओ के कुछ पदाधिकारी भी निगरानी के दायरे में आए है। प्राप्त जानकारी के अनुसार अवैध रोहिंग्या शरणार्थियों को अवांछित तरीके से मदद पहुंचाने वाले संगठनों और व्यक्तियों की सूची गृह मंत्रालय की विदेशी नागरिक शाखा को मुहैया करायी गई है। इसमें जम्मू कश्मीर, दिल्ली, तेलंगाना, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश सहित दर्जन भर राज्यों में रह रहे रोहिंग्या शरणार्थियों की संख्या और अन्य आंकड़ों से मंत्रालय को अवगत कराया गया है। मंत्रालय ने सभी संबद्ध राज्य सरकारों को रोहिंग्या शरणार्थियों पर पैनी नजर रखने को कहा है। जिससे इन्हें वापस म्यांमार भेजने की केन्द्र सरकार की योजना को समय से पूरा किया जा सके। मंत्रालय के निर्देश पर सभी संबद्ध राज्य सरकारों ने हाल ही में रोहिंग्या शरणार्थियों की बायोमेट्रिक पहचान सुनिश्चित करने की पहल शुरू की है। इसके अलावा रोहिंग्या शरणार्थियों को फर्जी दस्तावेजों के आधार पर जारी किये गये आधार कार्ड भी रद्द किये जायेंगे। उल्लेखनीय है कि खुफिया एजेंसियों ने अपनी ताजा रिपोर्ट में गृह मंत्रालय को अवैध रोहिंग्या शरणार्थियों के पूर्वोत्तर राज्या से दक्षिण भारतीय राज्यों की ओर रुख करने की जानकारी दी थी। इसके आधार पर की गयी कार्रवाई में तेलंगाना पुलिस ने हैदराबाद में अवैध पहचान पत्र रखने वाले रोहिंग्या मूल के लोगों के खिलाफ ४४ मामले दर्ज किये हैं। मंत्रालय के अधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक भारत में १६ हजार रोहिंग्या शरणार्थियों के पास संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी का प्रमाण पत्र है। देश में रह रहे राहिंग्या मूल के लोगों की कुल संख्या लगभग ४० हजार है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से सभी रोहिंग्या मुसलमानों को शीघ्र वापस भेजने की मांग की है।

शेष पृष्ठ 5 का

संसार को सुन्दर बनाने की.....

समाज ने प्रकृति की शक्तियों को माँ–पिता देवता की तरह देखा था। महाभारत के श्रीकृष्ण उसी तत्त्वदर्शन के व्याख्याता हैं। वैदिक ज्ञान सनातन प्रवाह है। गीता के चौथे अध्याय की शुरूआत में श्रीकृष्ण इसी ज्ञान की समाप्ति की चर्चा करते हैं–दीर्घकाल में यही तत्त्व ज्ञान नष्ट हो गया। तत्त्वज्ञान का पराभव ही महाभारत की कलह है। भारत प्रकाशरत राष्ट्रीयता है और धर्म है इसी राष्ट्रीयता का संविधान। धर्म नाम के इस संविधान का सतत् विकास हुआ है। दर्शन विज्ञान ने इस विकास का नेतृत्व किया है।

धर्म की जन्मतिथि का आकलन असंभव है। ऋग्वेद के रचनाकाल को कम से कम ईसा से ७–८ हजार वर्ष पूर्व मानना चाहिए। कुछेक सूक्त इससे भी प्राचीन हो सकते हैं और कुछेक सूक्त ईसा के चार हजार वर्ष पहले के आसपास के भी। काणे के अनुसार ४०००–१००० ईसा पूर्व के बीच वैदिक संहिता और उपनिषद् उगे हैं। प्रमुख उपनिषदों का रचनाकाल १५०० ई.पू. भी हो सकता है। कुछ का ईस्वी सन् के बाद भी। काणे के अनुसार ८०० से ४०० ईसा पूर्व के मध्य प्रमुख श्रौत सूत्र और गृहसूत्र रचे गये। काणे के अध्ययन विवेचन में गौतम, आपस्तंब, बोधायन आदि के धर्मसूत्र भी ६००–३०० ईसा पूर्व के हैं। वे गीता का रचनाकाल भी ५००–२०० ईसा पूर्व अनुमानित करते हैं। गीता महाभारत का ही हिस्सा है।

शेष पृष्ठ 7 का

भारतीय अर्थव्यवस्था की.....

सुधारों पर भी जोर देना होगा, जिसमें निर्यातोन्मुखी विनिर्माण क्षेत्र को गति मिल सके। तभी भारत में आर्थिक एवं औद्योगिक विकास की नयी संभावनाएं आकार ग्रहण कर सकती हैं। मेक इन इंडिया की सफलता के लिए कौशल प्रशिक्षित युवाओं की कमी को दूर करना होगा। उद्योग–व्यवसाय में कौशल प्रशिक्षितों की मांग और आपूर्ति में बढ़ता अंतर दूर करना होगा। पिछले दिनों क्रेडिट रेटिंग एजेंसी मूडीज ने कहा कि अमेरिका और चीन के बीच छिड़े व्यापार युद्ध, अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल के बढ़ते दाम और रुपये की कीमत में ऐतिहासिक गिरावट से अब पेट्रोल और डीजल में आ रही तेजी भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

ऐसे में यह उचित होगा कि देश को पेट्रोल और डीजल की महंगाई से बचाने के लिए सरकार अपना ध्यान ऊर्जा नीति को नये सिरे से तैयार करने पर केंद्रित करे, ताकि पेट्रोल–डीजल की बढ़ती कीमतों से होने वाली आर्थिक मुश्किलों को कम किया जा सके। सरकार द्वारा बिजली से चलने वाले वाहनों पर काफी जोर देना होगा। इलेक्ट्रिक कारों को टैक्स कम करके बढ़ावा देना होगा। जून २०१८ में नीति आयोग द्वारा दिये गये उस महत्वपूर्ण सुझाव पर गौर करना होगा, जिसमें कहा गया है कि राज्य परिवहन निगमों को लक्ष्य देना होगा कि वे अपने परिवहन बेड़े में एक निश्चित प्रतिशत में इलेक्ट्रिक वाहन शामिल करें। केंद्र व राज्य सरकारों को चाहिए कि वे सार्वजनिक परिवहन सुविधा को सरल बनायें।

शेष पृष्ठ 7 का

कश्मीर में कश्मीरी पण्डितों की...

और इस पर दो शब्द लिखने हेतु किसी प्रतिष्ठित साहित्यकार का नाम बताने के लिए कहा। मैंने झट से उत्तर दिया, "अटल जी से बढ़कर कौन हो सकता है?" और ऐसा ही हुआ। अटल जी ने कहा– "अब फिरन में छिपाकर तिरंगा लेकर भागने की नौबत नहीं आयेगी और सहर्ष भरत जी के काव्य–संग्रह हेतु दो शब्द लिखे। मेरी अन्तिम भेंट अटल जी से 'विश्व हिन्दी संगोष्ठी' के अवसर पर गान्धी शान्ति प्रतिष्ठान दिल्ली में हुई। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्त्वावधान में आयोजित उक्त संगोष्ठी में विपक्ष के नेता के रूप में अटल जी मुख्य अतिथि थे। पोलेण्ड के राजदूत मारिया क्रिस्टोफ ब्रिस्की तथा चेक गणराज्य के राजदूत ओदोनेल स्माइकल भी मंचासीन थे। मैंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने की बात उठायी। दो राजदूतों ने भी समर्थन किया। अध्यक्षीय भाषण में अटल जी ने इस दिशा में आवश्यक कदम उठाने पर बल दिया।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....150/- रुपये

द्विवार्षिक.....300/- रुपये

आजीवन सदस्य.....1500/- रूपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- **हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001**

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंर्तराष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 6 का

बैंक ऑफ चाइना पर.....

पर पुनिर्विचार, चीनी बैंकिग गतिविधियों पर नियंत्रण समेत सभी विकल्पों पर सरकार को विचार करना चाहिए। कम–से–कम चीनी बैंकों की गतिविधियों पर नजर रखने का न्यूनतम काम तो आरबीआई को करना ही चाहिए। याद रखना होगा कि चीनी सरकार, चीनी कपंनियों और चीनी वित्तीय क्षेत्र की गतिविधियों में पारदर्शिता का पूर्ण अभाव होता है। इन तमाम कारणों से चीन के साथ व्यवहार में हमारा सजग रहना बहुत जरूरी है।

शेष पृष्ठ 9 का

बर्बाद नहीं करें औषधि .....

गरारे करें। आवाज साफ होगी व खराश में आराम मिलेगा। पानी की एक जापानी विधि है, जिसके अन्तर्गत सुबह उठकर बिना मुँह धोए एक से चार गिलास पानी एक साथ पीएँ एवं ४५ मिनट तक कुछ भी खाए–पीएँ नहीं। इस प्रयोग से हाईपरटेंशन, गैस की तकलीफ, मधुमेह, कब्ज, जोड़ों का दर्द, मोटापा आदि कई रोगों से छुटकारा मिल सकता है। जापानी लोग विश्व भर में सबसे लम्बी आयु वाले होते हैं। वहाँ ऊषापान का प्रचलन है। जापानी इसे वाटर थेरेपी कहते हैं।

पानी पीने के नियम : पानी हमेशा बैठकर पीना चाहिए, पानी व बर्तन साफ हों। पानी धीरे–धीरे घूंट–घूंट पीना चाहिए। गट–गट करके या शीघ्रता से नहीं पीना चाहिए। पानी को रोटी की तरह धीरे–धीरे पीएँ। भोजन के बीच में पानी न पीएँ। खाना खाने के आधा से एक घंटे बाद पानी पीएँ। मूत्र त्यागने से पूर्व, सोने से पूर्व तथा उठने के बाद पानी पीना चाहिए।

घड़े का पानी अत्युत्तम : अलग–अलग धातुओं–पीतल, तांबा, एल्युमीनियम आदि के बर्तनों में पानी जमा करने की अपेक्षा मिट्टी के बर्तन में पानी रखने से उनमें जीवाणु पनपने पर रोक लगती है और पानी ज्यादा समय तक शुद्ध व सुरक्षित बना रहता है।

शेष पृष्ठ 2 का

स्वास्तिक.....

पुराने ध्वज पताकाओं पर यह चिह्न मिले हैं। संसार के प्राचीनतम देश आस्ट्रिया, जापान, स्कॉटलैंड, यूरोप तथा मेक्सिको में भी खुदाई में प्राप्त मिट्टी के बर्तनों पर स्वास्तिक चिह्न अंकित है। सिन्धु घाटी से मुद्राओं, बर्तनों आदि में स्वास्तिक चिह्न उपलब्ध हुए हैं उस समय लोग सूर्य पूजक थे और इस प्रतीक को सूर्य का प्रतीक माना गया था। पाणिनी के व्याकरण मत्स्य पुराण आदि ग्रन्थों में भी इस चिह्न का विशद विवेचन हुआ है। ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी की खण्डगिरि और उदयगिरि की रानी की गुफाओं में स्वास्तिक चिह्न मिले हैं। पाणिनी की व्याकरण में भी इसका उल्लेख है। पाली भाषा में स्वास्तिक को साक्षियों के नाम से पुकारा गया है जो बाद में साखी या साकी प्रचलित हो गये। जैन परम्परा के मांगलिक प्रतीक 'अस्तमंगल' दृव्यों में स्वास्तिक का सर्वोपरि स्थान है। स्वास्तिक की चार रेखाओं को चार प्रकार से मंगल प्रतीक माना गया है वे हैं–मंगल, सिद्ध–मंगल, साहू–मंगल और केवलि पण्णतो धर्म मंगल।

स्वास्तिक में एक–दूसरे को काटती हुई दो सीधी रेखाएँ होती हैं जो आगे चलकर मुड़ जाती हैं इसके बाद में भी अपने सिरों पर और आगे की तरफ मुड़ी रहती हैं। स्वास्तिक की आकृति दो प्रकार की होती है। इसे दक्षिणावर्त स्वास्तिक कहते हैं जो हमारी प्रगति का सूचक है। दूसरी आकृति में रेखाएँ पीछे की ओर संकेत करती हुई हमारे बायीं ओर मुड़ती हैं। इसे वामवर्त स्वास्तिक कहते हैं। इसे अशुभ माना गया है। जर्मन के तानाशाह हिटलर की पताका में वामावर्त स्वास्तिक अंकित था इसलिए उसे पराजय का मुँह देखना पड़ा। स्वास्तिक की दो रेखाएँ पुरुष और प्रकृति की परिचायक हैं। भारतीय धर्मग्रन्थों में इस चिह्न को विष्णु, सूर्य, सृष्टिचक्र तथा ब्रह्माण्ड का प्रतीक माना गया है। कुछ संतों ने इसे गणेश का प्रतीक मानकर वन्दना के लिए प्राथमिकता दी है। इसे ही सुदर्शन चक्र का प्रतीक भी माना है। भास्कराचार्य ने इसे ब्रह्मा का रूप माना है। इसकी चार भुजाओं को चार वर्णों की एकता का प्रतीक माना गया है तथा इन रेखाओं को ब्रह्मा के चार मुख, चार हाथ और चार वेदों के रूप में भी अंगीकार किया गया है। यह चिह्न धनात्मक चिह्न या प्लस को प्रकट करता है जो हमारी समृद्धि का प्रतीक है। स्वास्तिक की खड़ी रेखा को ज्योर्तिलिंग तथा आड़ी रेखा को विश्व के विस्तार का सूचक माना जाता है। यह चारों भुजाएँ चारों दिशाओं के कल्याण की भावना को व्यक्त करती हैं इसलिए रेडक्रॉस सोसायटी ने इसे अपनाया। विद्युत सिद्धान्त के अनुसार इन दो भुजाओं को नेगेटिव और पॉजीटिव की संज्ञा दी गई है जिनके मिलने से विशेष ऊर्जा अर्जित होती है। स्वास्तिक के चारों ओर लगाए जाने वाले बिन्दुओं को चार दिशाओं के रूप में माना गया है। कहा गया है कि चतुर्मास में स्वास्तिक व्रत करने वाले तथा मन्दिर में अस्तदल से स्वास्तिक बनाकर पूजन करने में महिलाओं के सौभाग्य में वृद्धि होती है।

इस प्रकार यह मांगलिक चिह्न देश विदेश में सदैव पूजनीय रहा है।

शेष पृष्ठ 4 का

योगासन जो दिल रखे.....

- हर ३ महीने में ग्लाईसीकोसाईलेटेड हीमोग्लोबिन ए१सी (Glyco HbA1C)
- साल में १ बार लिपिड प्रोफाइल, यूरिया, क्रिएटिनिन, ई॰सी॰जी॰, माइक्रोएल्ब्यूमिन, पैरों की जाँच, आँख की जाँच।

आवश्यकतानुसार अन्य जाँचें : थायरॉयड, तंत्रिकाओं की जाँच, आँखों के परदे की फ्लोरोसिन एंजियोग्राफी। हृदय की विशेष जाँचें जैसे–ईको–कार्डियोग्राफी, टी॰एम॰टी॰, एंजियोग्राफी इत्यादि।

आमतौर पर टाइप–१ डायबिटीज में प्रत्येक ३ महीने में एवं टाइप–२ डायबिटीज में प्रत्येक ६ महीने में HbA1C की जाँच कराना अनिवार्य है।

विज्ञापन हेतु भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त डी.ए.वी. नं.-124778
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिन बुधवार - बृहस्पतिवार

डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77

यह भी सच है

हलाला के खिलाफ आवाज उठाने वाली पर तेजाब से हमला

इंकलाब (१८ सितम्बर) के अनुसार सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश के बुलदंशहर में तेजाब हमले की शिकार होने वाली शबनम रानी को कड़ी सुरक्षा प्रदान करने का आदेश जारी किया है। सर्वोच्च न्यायालय ने बुलंदशहर के पुलिस कप्तान को निर्देश दिया है कि शबनम रानी को सुरक्षा प्रदान की जाए और उसके इलाज की मुफ्त व्यवस्था राज्य सरकार करे। न्यायालय ने यह भी कहा कि शबनम रानी को मुआवजा देने पर भी राज्य सरकार को विचार करना चाहिए। मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा ने कहा कि शबनम रानी ने हलाला प्रथा को चुनौती देते हुए न्यायालय में जो याचिका दायर की थी उसके कारण उसकी जान को खतरा पैदा हो गया है। ज्ञातव्य है कि दिल्ली के ओखला क्षेत्र की रहने वाले शबनम रानी का निकाह बुलंदशहर के एक युवक से हुआ था जिसके बाद उसके पति ने उसे तलाक दे दिया और तलाक के बाद उसके पति ने दबाव डाला कि वो अपने देवर से हलाला करवाए।

अखबार मशरिक(१४ सितम्बर) के अनुसार बुलदंशहर में हलाला प्रथा के खिलाफ आवाज उठाने वाली एक मुस्लिम महिला पर कुछ अज्ञात आक्रमणकारियों ने तेजाब फेंका। इस हमले में महिला बुरी तरह से घायल हो गई है। घटना बुलंदशहर कोतवाली के समीप हुई। संबंधित महिला दिल्ली की रहने वाली है और उसका ससुराल बुलंदशहर में है। इस महिला का अपने ससुराल से तीन तलाक का विवाद चल रहा है। इस महिला ने आरोप लगाया था कि उसके पति ने उस पर इस बात के लिए दबाव डाला था कि वह अपने देवर से हलाला करवाए।

मुस्लिम नेताओं के झगड़े ने लिया खतरनाक रूप

इंकलाब(२४ अगस्त) के अनुसार ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट के प्रमुख एवं सांसद मौलाना बदरुद्दीन अजमल को ब्लैकमेल करने और धमकी देने के आरोप में देवबंद क्षेत्र से पूर्व विधायक माविया अली को गिरफ्तार कर लिया गया है। बदरुद्दीन अजमल ने माविया अली के खिलाफ दिल्ली के एक थाने में शिकायत दर्ज करवाई थी। इसके बाद पुलिस ने जाल बिछाकर नई दिल्ली के एक होटल से माविया अली को गिरफ्तार कर लिया। उस पर आरोप है कि उसने सांसद बदरुद्दीन अजमल से एक करोड़ रुपए की रकम मांगी थी। बाद में माविया अली को जमानत पर रिहा कर दिया गया। समाचार पत्र के अनुसार मौलाना अजमल ने देवबंद में अस्पताल बनाने के उद्देश्य से साढ़े छह बीघा जमीन खरीदी थी। बाद में उन्होंने इस भूमि को बेचकर बड़ी भूमि का एक प्लॉट खरीदने का फैसला किया। मौलाना अजमल के प्रबंधक जमाल अख्तर के अनुसार १६ अगस्त को माविया अली ने देवबंद के शकील अहमद द्वारा मौलाना अजमल से मुलाकात की। मौलाना अजमल ने अपनी भूमि को बेचने की पेशकश की और उन्होंने छह करोड़ रुपए मांगे। इसके बाद माविया अली मौलाना अजमल से उनके आवास पर मिला और विभिन्न मुद्दों पर हुई बातचीत को रिकॉर्ड कर लिया जिसके बाद वो उन्हें ब्लैकमेल करने लगे। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मौलाना अजमल अवैध रूप से धंधा करके सांसद बने हैं और वे इस संबंध में मीडिया में समाचार प्रकाशित करवाएंगे। पुलिस के अनुसार इन दोनों के बीच धन का कोई लेन–देन नहीं हुआ था। अब पुलिस इस बात की जांच की रही है कि माविया अली ने इस तरह किसी और को भी ब्लैकमेल किया है। मौलाना अजमल के अनुसार माविया अली ने देवबंद वासी होने के कारण इस भूमि की कीमत में से २५ लाख रुपए कम करवा दिए थे और उसे १ अगस्त तक भूमि की कीमत अदा करनी थी। मगर वो टाल–मटोल करता रहा। माविया अली ने १४ अगस्त को लखनऊ से फोन करके एक करोड़ रुपए की मांग की और धनराशि ना देने पर उसने मौलाना अजमल से हुई बातचीत को मीडिया में समाचार प्रकाशित करवाने की धमकी दी। समाचार पत्र ने यह भी दावा किसा कि इस बातचीत का ऑडियो वायरल हो गया थ। बताया जाता है कि माविया अली ने कुछ सीडी बना रखी हैं जिसके आधार पर वो ब्लैकमेल कर रहा था। मौलाना अजमल दारूल उलूम देवबंद की कार्यसमिति के भी अध्यक्ष हैं।

इंकलाब(१२ सितम्बर) के अनुसार पुलिस इस मामले की जांच कर रही है और वो आवास का नमूना लेने के लिए उसे नोटिस जारी किया है। कुछ संगठनों द्वारा देवबंद में प्रदर्शन करके मौलाना अजमल और माविया अली के पुतले फूंके गए है और उन पर हवाला कारोबार में लिप्त होने का आरोप लगाया गया।

कबिरा खड़ा बजार में

संघ के बदलते विचार हो सकते हैं घातक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसा संगठन है जो गैर राजनीतिक होते हुए भी फिलहाल अपरोक्ष रूप से सत्ता में जबरदस्त पकड़ रखता है। अगर हम यह भी कहें कि संघ की ही बदौलत आज भाजपा सत्ता में है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। कट्टर हिन्दुत्व वाली विचारधारा लेकर चलने वाला यह संगठन अब धीरे–धीरे लचीला होता जा रहा है। ऐसा पिछले कुछ दिनों से देखा जा सकता है। भाजपा के धारदार हथियार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत अश्वमेध यज्ञ की यात्रा पर निकले हुए हैं। जिस तरह की लचीली भाषा का वे प्रयोग कर रहे हैं, वह कितनी प्रभावकारी हो पाएगी, यह तो समय ही तय करेगा। मूल में तो भाजपा संघ की एक शाखा है। भागवत जी अपने बयानों में संघ की हिन्दुत्व की परिभाषा, संविधान का सान्निध्य, पूरे गांव का एक कुआं, एक मन्दिर की बात, एक श्मशान की बात कह रहे हैं। वे कह चुके हैं कि वे राम मन्दिर निर्माण के पूर्णतः हिमायती हैं और आरक्षण के भी। दोनों बातें साथ बैठती दिखाई नहीं देती। देश–विदेश में कथित लिंचिंग को लेकर भाजपा सरकारों की खूब किरकिरी हुई है। गौ–हत्या के नाम पर हत्याओं के लिए पहले ही बदनाम की जा रही है। ऐसी स्थिति में संघ प्रमुख का यह बयान कि 'जिस दिन हम कहेंगे कि हमें मुसलमान नहीं चाहिए, उस दिन हिन्दुत्व नहीं रहेगा' कितना कारगर होगा? पिछले वर्षो में संघ की हिन्दुत्व की परिभाषा ने भी करवटें बदली हैं। जब भाजपा मुस्लिम विरोधी वातावरण बनाने के लिए बदनाम है, तब मोहन भागवत का बयान उन्हें शान्त करता दिखाई नहीं पड़ता। आग लगने पर कुआं खोदा जा रहा है। इस बयान को 'अनेकता में एकता' का प्रयास तो नहीं कह सकते। यह भी एक कटु सत्य है कि संघ का ही एक घटक मुसलमानों के सख्त खिलाफ है। हम एक ओर कह रहे हैं कि सभी देशवासी हिन्दू हैं और दूसरी तरफ भागवत का आह्वान है कि 'लालच में जो दूर चले गए, उन्हें वापिस लाओ।' तब संविधान के अनुसार सभी धर्मों की रक्षा की बात कैसे मानी जाए? संविधान धर्मनिरपेक्ष है। फिलहाला बहाना हिन्दू–मुस्लिम के बीच संतुलन का है। कल संतुलन संघ भी नहीं कर पाएगा। भाजपा की जमीन आज ही खिसकती जान पड़ रही है। संघ विश्व का बृहद्तम संगठन है। इसे राष्ट्रीय मुद्दों पर अपनी नीति इतनी लचीली नहीं बना लेनी चाहिए, मानो राजनीति के निर्णयों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास कर रही हो। संघ को तो निर्णय लेने से पूर्व सरकार को भावी आशंकाओं से अवगत कराना चाहिए। निर्णय होने पर उनका समर्थन भी करना पड़े और नई परिस्थितियों का भय भी बना रहे, यह देश के हित में नहीं होगा, न ही संघ के हित में होगा। भाजपा की हां में हां मिलाने के स्थान पर एक पितृ–संस्था की तरह आदेशात्मक रवैया बना रहना चाहिए। इसके बिना देश को पितृभूमि और मातृभूमि का पांठ पढ़ाना काम नहीं आएगा। हिन्दू धर्म नहीं, जीवन पद्धति है। देश का हर नागरिक हिन्दू है। यह सब बातें कहने मात्र की नहीं हैं। बल्कि इस पर अडिग रहना होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का यही लचीला रूख कहीं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी का काम न कर दे।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 28 नवम्बर से 04 दिसम्बर 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, नई दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।